



जज्जत में क्या होगा ?

लेखक

मौलाना डा. मुहम्मद हबीबुल्लाह मुस्तार



निसार पब्लिकेशन

जज्जत में क्या होगा?

लेखक

मौलाना डा. मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख्तार



अनुवादक:

मुहम्मद इमरान कासमी एम.ए. (अलीग.)



नीसार पब्लिकेशन

422, मटियामहल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फेहरिस्ते मज़ामीन

क्र.स.	क्या?	कहां?
1.	मुकद्दमा	7
2.	जन्नत के लुग़वी व शरई मायने	11
3.	तरोताज़ा चेहरे	12
4.	मुहर लगी शराब	12
5.	मोतियों के खेमे, ज़मुरद के मिंजर	13
6.	नई उम्र के लड़के और ख़ादिम	13
7.	हूरे	14
8.	नहरें और बागात	15
9.	मन पसन्द चार्जे	15
10.	दिल को खुश करने वाले मशाग़िल	16
11.	आमने-सामने बैठना	17
12.	सोने-चाँदी के मकानात व बागात	18
13.	जन्नत की नेमतें एक नज़र में	19
14.	बेनज़ीर और बेमिसाल	23
15.	जन्नत की क़द्र व मरतबा	24
16.	जन्नत की औरतें	24
17.	जन्नत का पेड़	24
18.	मोती का खेमा	25
19.	जन्नतुल फिरदौस	26
20.	जन्नत के बाज़ार	26
21.	जन्नतियों की सिफ़तें	27

क्र.स.	क्या?	कहां?
22.	जन्नत में अल्लाह की तारीफ व पाकी बयान करना	28
23.	नाज़ व नेमत की जगह	29
24.	जन्नत में बीमारी न होगी	29
25.	जन्नत के बालाख़ाने	30
26.	नरमदिल जन्नती	31
27.	अल्लाह की रिज़ा	31
28.	मामूली दर्जे के जन्नती का ठिकाना	32
29.	जन्नत की चौखट	32
30.	जन्नत की ईंट-गारा	33
31.	जन्नत के पेड़ों का तना	34
32.	जन्नत के दर्जे	34
33.	जन्नत के दर्जों की वुसूअत	34
34.	जन्नत की पोशाक	35
35.	जन्नत वालों की कुव्वत व ताकत	36
36.	जन्नतियों के कंगन	36
37.	जन्नतियों का हुस्न व ख़ूबसूरती	36
38.	जन्नत वालों की उम्रें	37
39.	सिद्रतुल-मुत्तहा	37
40.	हौजे कौसर	38
41.	जन्नत के घोड़े	38
42.	जन्नतियों की सफ़ें	40
43.	जन्नत का दरवाज़ा	40

क्र.स.	क्या?	कहां?
44.	जन्नत में खरीद व बेच	41
45.	जन्नत वालों के खादिम व बीवियाँ	43
46.	जन्नतियों की उम्र	44
47.	जन्नतियों के ताज	44
48.	जन्नती के यहाँ गर्भ और पैदाइश	45
49.	हूरों के जमा होने की जगह	45
50.	चार दरिया	46
51.	जन्नत की औरत	47
52.	खेती-बाड़ी	48
53.	जन्नत में नींद न होगी	49
54.	अल्लाह तआला का दीदार	50
55.	चौदहवीं का चाँद	50
56.	पर्दा हटा दिया जाएगा	51
57.	सबसे कम और सबसे बड़े दर्जे वाला जन्नती	52
58.	अल्लाह तआला के दीदार की नज़ीर	53
59.	नूर ही नूर	54
60.	अल्लाह तआला की ज़ियारत	55
61.	हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम	56
62.	अल्लाह का दीदार	59
63.	जन्नत की हूरें	62
64.	जन्नत के पेड़	62
65.	जन्नतियों की खूबसूरती	63
66.	जन्नतियों का डील-डोल	63

क्र.स.	क्या?	कहां?
67.	जन्नत का पेड़ तूबा	64
68.	पाँच चीज़ें	65
69.	आखिरत का आराम	66
70.	दुनिया आखिरत की खेती है	66
71.	जन्नत का टिकट	67
72.	जन्नत की कीमत	67
73.	जन्नत व दोज़ख का दाखिला	67
74.	जन्नत का मेहर	68
75.	जन्नत की किस्में	69
76.	नेमत का दस्तरख्वान	69
77.	जन्नत की नेमतों की नज़ीरें	69
78.	खात्मा	71

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुकद्दमा

الحمد لله ذي الفضل والجنان، والصلوة والسلام على خير خلقه محمد ذي الآيات والتبيان، وعلى آله وصحبه ومن تبعهم إلى يوم القيامة باحسان، وبعد-

मोहतरम हज़रात! आप हज़रात के सामने जन्नत से मुताल्लिक मुवारक हदीसों का कुछ हिस्सा पेश किया जा रहा है ताकि दुनियावी धन्धों, मशगलों और आजकल की फ़िक्र के साथ-साथ हम अपनी पैदाइश के असल मक़सद को सामने रखें।

अल्लाह पाक का इर्शाद है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ، مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا، إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ.

(الذاریات: ۵۶-۵۸)

तर्जुमा: और मैंने तो जिन्नात और इन्सान को पैदा ही इस ग़र्ज़ से किया है कि मेरी इबादत किया करें। मैं उनसे न रोज़ी चाहता हूँ और न यह चाहता हूँ कि मुझे खिलाया करें, अल्लाह तो खुद ही सबको रोज़ी पहुँचाने वाला है, ताक़त वाला मज़बूत है।

ऐ इन्सान! तू अपनी पैदाइश के मक़सद को जान ले, अल्लाह तआला की इबादत में लग जा, अल्लाह तआला तेरी तमाम हाजतों और ज़रूरतों को पूरा कर देगा। वह तो ऐसा ख़ालिक है जिसने तेरे वजूद में आने से पहले तेरे रिज़क़ को मुक़र्रर कर दिया है। फ़रमाया:

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ. (الذاریات: ۲۲)

तर्जुमा: और आसमान में तुम्हारा रिज़्क भी है और वह भी जिसका तुमसे वायदा किया जाता है।

तू अपने असल काम में लग जा, तेरा आका और मौला तेरी ज़रूरियात का कफ़ील होगा। इन्सान अभी माँ के पेट में होता है कि उसके रिज़्क का वहीं से इन्तिज़ाम कर दिया जाता है। माँ के पेट से बाहर आया और रब्बे जुल-जलाल ने अपने फज़ल व करम से उसके लिए दूध की ऐसी नहरें जारी कर दीं जिनमें मिठास भी है, हल्कापन भी है, लज़्ज़त भी है, ज़रूरत के मुताबिक़ हरारत भी है और जिस्म की बढ़ोतरी के लिए कुव्वत और ताक़त भी। औरत का सीना नौमौलूद (नव जात) के लिए रिज़्क का कुदरती ज़रिया और दूध का खुश्क न होने वाला चश्मा बन जाता है। जो जात उस वक़्त तुम्हें पालती और रिज़्क मुहैया करती है वह सारी ज़िन्दगी रिज़्क देगी। इस दुनिया में अपने असली मक़सद को जानो। याद रखो! अगर तुमने इस खेत में आख़िरत में काम आने वाली खेती बोई तो मज़े करोगे वरना इसका अन्जाम बड़ा तबाहकुन और दर्दनाक होगा।

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम हर ज़माने में लोगों को भूला सबक़ यद दिलाने आए और सबसे आख़िर में ख़ातिमुल अंबिया हबीबे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और उन्होंने भी खुदा की मख़्लूक़ को खुदा से इसी तरीक़े से मिलाया जिस तरह उनके साथी अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने मिलाया था। नेक आमाल पर जन्नत का वायदा किया गया है। अपने फ़रीज़े को अदा कीजिए और उसपर फज़ले इलाही से हमेशा की नेमतों के मुस्तहिक़ बन जाइए।

दुनिया आजमाइश, चिन्ताओं, ग़मों और परेशानियों का घर है। इन परेशानियों से ग़मगीन, परेशान और बेकरार न होओ सब्र करो।

दुनियावी के मजे उड़ाने में न लगे। आखिरत की नेमतें और याद करके इन दुनियावी लज्जतों से मुंह फेर लो। हराम चीजों को अल्लाह जल्ल शानुहू के खौफ व डर और जन्नत की नेमतों के हासिल होने की नीयत से छोड़ दो। वहाँ तुम्हें हमेशा रहने वाली नेमतें मिलेंगी। जन्नत की उन राहतों के मुकाबले पर तमाम दुनिया की राहतें और नेमतें बेहकीकत हैं। अल्लाह तआला के खौफ को सामने रखते हुए अपने आपको सही रास्ते पर रखिए। जन्नत की लौ लगाइए, सही रास्ते पर अग्रसर रहिए, इन्शा अल्लाह जन्नत की अज़ीम दौलत और वसीअ सल्लतनत मिलेगी और दर्दनाक जहन्नम के अज़ाब और अल्लाह के ग़ज़ब से छुटकारा हासिल होगा।

दिल चाहा कि पढ़ने वालों की खिदमत में जन्नत से मुताल्लिक़ चन्द कुरआनी आयतें और मुबारक हदीसें पेश कर दी जाएं जो अल्लाह तआला के नेक बन्दों के लिए जाज़िब और जन्नत की तरफ़ ले जाने का ज़रिया बनें और किसी की दुआ से इस नाकारा को भी जन्नत का परवाना मिल जाए तो बड़ी ही खुशनसीबी की बात हो। अल्लाह की रहमत बहाना ढूँढती है, शायद यही बहाना बन जाए। इसलिए आने वाले पन्नों में यह मुबारक ज़ख़ीरा पेश किया जा रहा है।

इसलिए ऐ क़ियामत और आखिरत पर ईमान व यकीन रखने वालो! ऐ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मानने वालो! ऐ कुरआने करीम और अहादीसे नबविया के मानने वालो! ग़फ़लत की नींद से जागो, न मालूम कब, किस वक़्त और कहाँ आँख बन्द हो जाए और फिर जन्नत और दोज़ख़ में से एक की तरफ़ भेज दिया जाए। अभी वक़्त है, अभी मोहलत मिली हुई है, अभी अमल करने की जगह में हो, जो करना है कर लो, चन्द दिन की मेहनत व मशक्कत

चन्द सालों की तंगी तुर्शी, ज़रा सी देर के लिए नफ़्स को कुचलना, ख्वाहिशात की नाफ़रमानी, हमेशा की जन्नत, कभी ख़त्म न होने वाली नेमतों और अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा और खुशनूदी दिलाने का ज़रिया बन सकती है। इसलिए अहद कीजिए कि नफ़्स व शैतान की गुलामी और दुनियावी लज़्ज़तों और ख्वाहिशों की इत्तिबा के बजाय अल्लाह जल्ल शानुहू और उसके रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकामों की पैरवी करेंगे। अल्लाह जल्ल शानुहू हमें और आप सबको जन्नत का मुस्तहिक बनाए, नेक आमाल की तौफीक अता फ़रमाए और हमारे मरहूमीन को जन्नतुल फिरदौस अता फ़रमाए, आमीन।

मेरे भाई मौलाना अताउर्रहमान साहिब और मेरे भाई मौलाना मुहिब्बुल्लाह साहिब का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है। इख़्लास से तसही (प्रूफ रीडिंग) की और बिरादरे मोहतरम सैयद शाहिद हसन साहिब का भी कि एहतिमाम से छपाई कराई। अल्लाह तआला सब हज़रात को जज़ाए ख़ैर दे।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين، والصلوة والسلام على
خير خلقه محمد وآله وصحبه اجمعين۔

लेखक

मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख्तार

१, ७, १४०६ हिजरी, मुताबिक ८, २, १९८६ ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत के लुग़वी व शरई मायने

लुगत में जन्नत के मायने ऐसा बाग़ जिसमें घने पेड़ हों। जिस लफ़्ज़ में 'जीम' और 'नून' होगा आम तौर से उसके मायने मख़्फ़ी और छुपी हुई चीज़ के आते हैं जैसे जन्नत, इसलिए कि वह हमारी आँखों से पोशीदा है। उसपर ईमान बिलग़ैब लाने का हुक्म दिया गया है। मोमिन उसपर उससे ज़्यादा यकीन व ईमान रखता है जो उसे आँखों से देखकर हासिल होता है। इसी तरह 'जिनीन' उस बच्चे को कहते हैं जो माँ के पेट में छुपा होता है। 'जुनून' एक बीमारी है जो इन्सान की अक्ल पर पर्दा डाल देती है। 'जिन्न' एक मख़्लूक है जो हमारी आँखों से पोशीदा है। (१)

जन्नत को जन्नत इसलिए कहा जाता है कि उसमें बड़े-बड़े सायादार फैली हुई टहनियों वाले पेड़ होंगे या इसलिए कि उसमें बाग़ होंगे और या इसलिए कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नतियों के लिए आँखों की ठण्डक का अजीब सामान पोशीदा कर रखा है।

शरीअत में जन्नत से वह लाफ़ानी और हमेशा रहने वाला लम्बा-चौड़ा घर मुराद है जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने मोमिन बन्दों के लिए बेशुमार नेमतों, इकराम, सम्मान और हूर व महलों के साथ तैयार कर रखा है। जन्नत और दोज़ख़ दोनों पैदा हो चुकी और मौजूद हैं, यही अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब है। यही कुरआने करीम की बेशुमार आयतों और बहुत सी हदीसों से साबित है।

जन्नत बड़ी बेहतरीन शानदार, पुरकैफ़, पुरबहार, शानदार और

देखने के लायक है। वहां की नेमतें बड़ी अजीब और हमेशा रहने वाली होंगी। वहां की राहतें, आराम और इनामात अनमोल होंगे। वहां की हर चीज़ सदाबहार और कभी खत्म न होने वाली होगी। वह अंबिया, मुकर्रबीन, सालिहीन, नेक काम करने वालों के रहने की जगह है वहां तकलीफ, रंज, ग़म और परेशानी व मलाल का नाम व निशान न होगा।

बहिश्त आं जा अस्त कि आज़ारे न बाशद

कसे रा बा-कसे कारे न बाशद

तर्जुमा: जन्नत वह जगह है कि वहां कोई तकलीफ न होगी, किसी को किसी से कोई सरोकार न होगा।

तरोताज़ा चेहरे

ज़रा सोचिए तो सही कि जन्नती कैसे मज़े में होंगे। चेहरे नेमतों के हासिल होने से चमकते और अल्लाह पाक के दीदार की वजह से तरोताज़ा और नूर भरे होंगे। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ. (المطففين: २४)

तर्जुमा: तू उनके चेहरों ही से राहत की तरोताज़गी जान लेगा।

وَلَقَهُمْ نَضْرَةَ وَسُرُورًا. (الدھر: ११)

तर्जुमा: और उनको ताज़गी और खुशी अता करेगा।

मुहर लगी शराब

मुहर लगी हुई आला दर्जे की शराब पिलाई जाएगी। फ़रमाया:

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيقٍ مُّخْتَلَمٍ، خِتَامُهُ مِسْكٌ. (المطففين: २१, २०)

तर्जुमा: उन्हें पीने को ख़ालिस शराब मिलेगी जिसपर मुश्क की मुहर लगी होगी।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَّعِينٍ، بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ، لَا فِيهَا غَوْلٌ

وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ. (الصافات: १०, ११, १२)

तर्जुमा: उनपर जाम का दौर करेगा बहती हुई शराब से (लबरेज़) सफ़ेद सफ़ेद, पीने वालों के हक में ख़ूब लज़ीज़, उससे न चक्कर आएगा और न उससे वे बहकी-बहकी बातें करेंगे।

मोतियों के ख़ेमे, ज़मुरद के मिंबर

मोतियों से बने हुए ख़ेमों में तह-वतह बिस्तरों पर याकूत व ज़मुरद (हरे रंग के कीमती पत्थरों) के मिंबरों पर बैठे होंगे। फ़रमाया:

مُتَكِيْنٌ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ. (الطور: २०.७)

तर्जुमा: तकिया लगाए होंगे बराबर बिछे हुए तख्तों पर।

مُتَكِيْنٌ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَ عَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ. (الرحمن: ७६)

तर्जुमा: ये लोग तकिया लगाए होंगे सब्ज़ मसूनदों और अजीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्श) पर।

गाव-तकियों से टेक लगाए होंगे

مُتَكِيْنٌ عَلَى فُرْشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ. (الرحمن: ०६)

तर्जुमा: वे लोग तकिया लगाए फ़र्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे।

عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكِيْنُونَ. (يس: ०६)

तर्जुमा: मसहरियों पर तकिया लगाए बैठी होंगी।

مُتَكِيْنٌ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ. (الكهف: २१)

तर्जुमा: उसमें मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।

नई उम्र के लड़के और ख़ादिम

शराब, शहद, दूध और पानी की नहरों के किनारे बैठे होंगे। ख़िदमत गुज़ार लड़के ख़ादिम चारों तरफ़ इशारे के मुन्तज़िर होंगे।

फरमाया:

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غُلَمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ (الطور: २६)

तर्जुमा: और उनके पास लड़के आएँ-जाएँगे जो उनके लिए हैं, गोया वे महफूज मोती हैं।

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانِ مُخَلَّدُونَ (الواقعة: १७)

तर्जुमा: उनके पास लड़के आएँ-जाएँगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे।

हूरें

हसीन व खूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें उनकी मुन्तज़िर होंगी, जिनकी खूबी यूँ ज़िक्र फरमाई:

فِيهِنَّ قَصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ، كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ (الرحمن: ५६, ५८)

तर्जुमा: उन (मकानों) में नीची निगाह वालियाँ होंगी कि उन लोगों से पहले उनपर किसी इन्सान ने तर्सरुफ़ किया होगा न जिन्न ने.....गोया वे याकूत और मरजान हैं।

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ، حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ (الرحمن: ७०, ७२)

तर्जुमा: उनमें अच्छी सीरत वालियाँ अच्छी सूरत वालियाँ होंगी.....गोरे रंग वालियाँ खेमों में महफूज होंगी और नौखेज हम-उम्र औरतें।

तरह-तरह के लिबासों, पोशाकों, ज़ेवरात और बनाव-सिंघार से सजी-धजी होंगी। हीरे जवाहरात के ताज उनके सरोँ पर होंगे।

फरमाया:

وَحُورٌ عِينٌ، كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ، جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

(الواقعة: २२, २३, २६)

तर्जुमा: और गोरी बड़ी आँखों वालीयाँ जैसे पोशीदा रखा हुआ मोती, यह उनके अमल के सिले में मिलेगा।

وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ. (مَنْ: ०२)

तर्जुमा: और उनके पास नीची निगाह वालीयाँ हम-उम्र होंगी।

नहरें और बागात

जन्नती अपने-अपने आमाल व नेकियों की बदौलत जन्नत के चश्मों, नहरों और बागों में मजे करेंगे। फरमाया:

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ، ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَمِينِينَ. (الحجر: ४०, ४१)

तर्जुमा: बेशक परहेजगार बागों और चश्मों में (बसते) होंगे। तुम दाखिल हो उनमें सलामती (और) अमन के साथ।

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ عَذْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ. (الكهف: ३१)

तर्जुमा: ये वे लोग हैं कि उनके लिए हमेशगी के बागात हैं उनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी। उनको उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे सब्ज रंग के कपड़े बारीक और दबीज पहनेंगे। उसमें मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।

मन पसन्द चीजें

अल्लाह तआला के तरह-तरह के इनामात से फायदा उठाते और अपनी पसन्दीदा चीजों से मजे लेते होंगे। उनपर वहां न किसी किस्म का खौफ तारी होगा, न नेमतों के छिनने और अपनी मौत का डर होगा। लिबास, पोशाक और जेवरात से सजे होंगे। फरमाया:

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا. (مريم: ६३)

तर्जुमा: यह जन्नत ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से इसका वारिस उसको बना देंगे जो (अल्लाह से) डरने वाला हो।

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ. (يونس: ६२)

तर्जुमा: कतई तौर पर न कोई खौफ है और न वे ग़मगीन होंगे।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَاسْتَبْرَقٍ مُتَقَبِّلِينَ..... لَا يَذُقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَى. (الدخان: ०१, ०२)

तर्जुमा: लिबास पहने होंगे बारीक और दबीज़ रेशम का आमने-सामने बैठे हुए..... वे वहाँ मौत का मज़ा भी न चखेंगे, हाँ सिवाय इस पहली मौत के।

يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ. (الحج: २४)

तर्जुमा: वहाँ उनको कंगन सोने के और मोती के पहनाए जाएंगे। वहाँ उनकी रेशम की पोशाक होगी।

وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ. (الانبیاء: १०२)

तर्जुमा: और वे लोग अपनी जी चाही चीज़ों में हमेशा रहेंगे।

दिल को खुश करने वाले मशागिल

दिल को खुश करने वाले मशागिल में मशगूल होंगे। जो मांगेंगे मिलेगा। फ़रमाया:

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَكَّهُوْنَ، هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٍّ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَكِئُونَ، لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ.

(يس: ०५, ०६, ००)

तर्जुमा: जन्नत वाले बेशक उस दिन अपने मशगले में खुश दिल होंगे। वे और उनकी बीवियाँ सायों में तकिया लगाए बैठी होंगी। उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो कुछ वे

मांगेंगे।

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ۔ (الزخرف: १)

तर्जुमा: और वहाँ वह सब कुछ मिलेगा जिसको जी चहेगा और जिससे आँखों को लज्जत मिलेगी।

आमने-सामने बैठना

आमने-सामने मसनद पर बैठे जन्नत में मजे करेंगे।

فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ، عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ، يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مُّعِينٍ۔

(الصافات: ४३, ४४, ४५)

तर्जुमा: राहत के बागों में होंगे तख्तों पर आमने-सामने बैठे हुए।
उनपर जाम दौर करेगा बहती हुई (शराब) से (लबरेज़)।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ، فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ، يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ۔ (الدخان: ५१, ५२, ५३)

तर्जुमा: अल्लाह तआला से डरने वाले बेशक अमन की जगह में होंगे (यानी) बागों में और नहरों में लिबास पहने होंगे बारीक और दबीज़ रेशम का, आमने-सामने बैठे हुए।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ، وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ، وَخَوْرٍ عَيْنٍ، كَأَمْثَالِ اللَّوْلُؤِ الْمَكْنُونِ۔ (واقعة: २०-२३)

तर्जुमा: और मेवे जिनको वे पसन्द करेंगे और परिन्दों का गोश्त जो उन्हें पसन्दीदा हो, और गोरी बड़ी आँखों वालीयाँ जैसे पोशीदा रखा हुआ मोती।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ۔ (الفرقان: १६)

तर्जुमा: उन्हें वहाँ जो कुछ वे चाहेंगे मिलेगा, वे हमेशा रहेंगे।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ۔ (ق: ३०)

तर्जुमा: उन लोगों को वहाँ सब कुछ मिलेगा जो वे चाहेंगे। और हमारे पास और भी ज्यादा है।

सोने-चाँदी के मकानात व बागात

जन्नती जन्नत में चाँदी सोने के मकानात, पेड़, बागात और ऐसी नहरें पायेंगे जिनकी ज़मीन चाँदी की, कंकर मरजान के होंगे। जन्नत की ज़मीन की मिट्टी खुशबूदार मुस्क और घास जाफ़रान की होगी।

उनके पास चाँदी के मोतियों, याकूत और मरजान से जड़े हुए प्याले लाए जाएंगे उनमें मुहर लगी शराब होगी जिसमें सल्सवील का मीठा पानी मिला हुआ होगा। प्याले ऐसे चमकदार और रोशन और लतीफ़ होंगे कि बाहर से शराब का नज़ारा होता होगा। ये जाम ऐसे खादिम के हाथ में होंगे जिसके चेहरे की चमक चमकते सूरज की तरह होगी लेकिन उस तेज़ी में मिठास व हुस्न और कशिश व ख़ूबसूरती होगी इसलिए जो शख्स ऐसे हमेशा रहने के घर पर यकीन रखता है और उसे यह मालूम है कि वहाँ न मौत आएगी न किसी किस्म की तकलीफ़ और ग़म व रंज, वहाँ न किसी किस्म का बदलाव और तब्दीली आएगी न उतार चढ़ाव, तो फिर भला वह ऐसे घर में कैसे दिल लगाता है जो ख़त्म और तबाह होने वाला है। उसके बाप-दादा यहाँ से रुख़्सत हुए और उसे भी एक दिन यहाँ से जाना है। अगर जन्नत में उसके सिवा और कोई नेमत न होती कि इन्सान वहाँ हमेशा सही सालिम तन्दुरुस्त व ताक़तवर रहेगा, भूख-प्यास और मौत का नाम व निशान न होगा, तब भी वह जन्नत इस लायक थी कि उसकी खातिर फ़ानी दुनिया से किनारा-कशी और मुंह फेर लिया जाए और उसपर इस दुनिया को तरजीह न दी जाए जो हर एतिबार से आजमाइश का घर, मुसीबतों का मक़ाम, और आफ़तों व वलाओं का

घर है। इसके मुकाबले में जन्नती जन्नत में हमेशा-हमेशा नेमतों में मजे करेंगे।

जन्नती अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार से लुत्फ हासिल करेंगे और उस दीदार से उन्हें वह लज़्ज़त व कैफ हासिल होगा जो और किसी नेमत से हासिल न हुआ होगा। मौला-ए-करीम का दीदार और निकटता, रिज़ा व खुशनूदी और सेहत व आफियत, हमेशगी व बका तमाम नेमतें इकट्ठी मिलेंगी। ऐसी जन्नत से लापरवाही बरतना और ऐसी दुनिया से दिल लगाना और उसमें मस्त रहना हिमाकत, बेवकूफी और बड़ी नासमझी की बात है।

कुरआन करीम में जन्नत की नेमतों, सिफ्तों, हूर व खादिम और इकराम व सम्मान को मुख्तलिफ़ मक़ामात पर ज़िक्र किया गया है, पढ़िए और ईमान व यकीन में इज़ाफ़ा कीजिए। सूर: रहमान और सूर: वाकिआ में ख़ास तौर से उनका तज़क़िरा मिलता है। हदीसों में भी इनको मुफ़स्सल बयान किया गया है, हमने इन हदीसों को मिश्कात शरीफ़ और बाज़ दूसरी किताबों से लिया है। सबका बयान करना मक़सूद न था वरना यह रिसाला बहुत बड़ा हो जाता इसलिए चन्द पेजों पर इक्तिफ़ा की खातिर हदीस की दूसरी किताबों को छोड़ दिया गया है।

जन्नत की नेमतें एक नज़र में

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ने एहयाउल उलूम (१) में जन्नत से मुताल्लिक़ कुछ तफ़सील लिखी है, वहां से कुछ हिस्सा मुख्तसर तौर पर नक़ल किए देते हैं।

नेकियों और ताआत के एतिबार से जन्नत के बहुत से दरवाज़े

हैं। एक रिवायत से मालूम होता है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। जन्नत के बालाखाने बेशुमार हैं। हर शख्स को उसके मर्तबे के हिसाब से बालाखाने मिलेंगे। इसलिए अगर आपको ऊँचे दर्जे चाहिए तो आप यह कोशिश कीजिए कि नेकियों और ताआत में दूसरों से आगे बढ़ें, दूसरे आपसे आगे न बढ़ सकें, इसमें मुकाबला करना चाहिए। इर्शाद है:

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ۔ (الحديد: २१)

तर्जुमा: दौड़ो अपने परवर्दिगार की मग़फ़िरत की तरफ़।

وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ۔ (المطففين: २६)

तर्जुमा: और ऐसी ही चीज़ की हिस्स करना चाहिए हिस्स करने वालों को।

जिस तरह आप दुनिया में यह चाहते हैं कि माल व दौलत जायदाद, मकान वगैरह में आप सबसे आगे रहें इसी तरह जन्नत व आखिरत के बारे में भी यही ज़ौक रखिए ताकि आप आला से आला दर्जे हासिल कर सकें। जहाँ किसी के आगे बढ़ने का इमकान (संभावना) ही नहीं रहेगा।

जन्नत की दीवारों की एक ईंट सोने की होगी, एक चाँदी की। मिट्टी ज़ाफ़रान और गारा मुश्क का होगा। बड़े-बड़े दरख़्त और शहद, शराब, दूध और पानी की नहरें बहती होंगी। दरख़्तों के तने सोने-चाँदी और मोतियों के होंगे। फलों से लदे हुए होंगे। जन्नतियों को सोना-चाँदी हीरे-जवाहिरात रेशम व सुनदुस पहनाया जाएगा। उनके कपड़े न पुराने होंगे न बोसीदा। जवानी को कभी घुन नहीं लगेगा। तीस (३०) तैंतीस (३३) साल के सदाबहार जवान रहेंगे। पसीने से मुश्क की खुशबू आती होगी।

जन्नतियों का खाना मुख्तलिफ़ किस्म के फल, मोटे ताजे परिन्दे, मन्न व सलवा, दूध, शहद और दूसरी वेशुमार चीजें होंगी। देखने में एक जैसी लेकिन जायका अलग-अलग होगा। इर्शाद है:

كُلُّ مَا رَزَقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَرَقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ

وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا. (البقرة: २०)

तुर्जमा: उन्हें जब कोई फल खाने को दिया जाएगा तो वे बोल उठेंगे कि यह तो वही है जो हमें (इससे) पहले मिल चुका है। और उन्हें वह (वाकई) दिया ही जाएगा मिलता-जुलता हुआ।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि से नक़ल किया गया है कि जन्नत के अनार बड़े डोल के बराबर होंगे। उसकी नहरें ऐसे पानी की होंगी जो कभी बदबूदार न होगा। ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके मजे में बदलाव नहीं आएगा। ख़ालिस ऐसे शहद की नहरें होंगी जो इन्सानों का साफ़ किया हुआ न होगा। ऐसी शराब की नहरें होंगी जो बड़ी लज़ीज़ होंगी पीने वाले उसे पीकर मदहोश न होंगे न उससे सिरदर्द होगा। वहाँ ऐसी नेमतें होंगी जिन्हें न किसी आँख ने देखा होगा न किसी कान ने सुना होगा, न किसी दिल पर उनका ख़याल गुज़रा होगा। ऐश व आराम में मजे करने वाले तैंतीस साल के हम-उम्र शहज़ादे होंगे। आसमान में उनका क़द साठ हाथ होगा। पुरकशिश जिस्म फ़ालतू बालों से ख़ाली। बेदाढ़ी, अज़ाब से महफूज़ पुरसुकून व मुत्मइन होंगे। उसकी नहरों में याकूत-ज़बर्जद की कंकरियां होंगी। उसमें पेड़ों की जड़ें, तने व बेलें मोतियों की होंगी। उनके फलों का इल्म अल्लाह जल्ल शानुहू ही को है। उसकी खुशबू पाँच सौ साल की दूरी से आएगी।

वहाँ हल्के-फुल्के ऊँट घोड़े होंगे। उनके कजावे, लगामें और ज़मीनें

याकूत की होंगी। एक दूसरे की ज़ियारत करेंगे। उनकी बीवियाँ बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूँ होंगी। वे महफूज़ छुपे छुपाए रखे हुए अंडे की तरह साफ़ सुथरी होंगी। एक-एक औरत अपनी दो उंगलियों के दरमियान सत्तर पोशाकें थामे होगी। वह उन्हें पहनेगी लेकिन वह इतनी लतीफ़ और साफ़-चमकदार व बारीक होगी कि उनके अन्दर उसकी पिंडली का गूदा नज़र आएगा। अल्लाह तआला ने उनके पाकीज़ा अख़्लाक़ कर दिए होंगे। उनके जिस्म मरने से महफूज़ होंगे। वहाँ न नाक से गंदगी आएगी न मुँह से थूक। न पेशाब आएगा न पाख़ाना। डकार आएगी उससे खाना हज़म होगा। मुश्क की खुशबू वाला पसीना आएगा। उन्हें वहाँ सुबह व शाम रिज़क़ मिलेगा।

जन्नत में जो शख़्स सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और सबसे कम दर्जे वाला होगा उसकी हुक्ूमत निगाह की हद तक सौ साल की दूरी तक फैली हुई होगी। सोने-चाँदी के महल और मोतियों के ख़ेमे होंगे। उसकी निगाह इतनी तेज़ कर दी जाएगी कि वह दूर की जगह करीब की तरह देखेगा। उसका सुबह का खाना सत्तर हज़ार सोने की प्लेटों में लाया जाएगा और इसी तरह शाम का खाना भी। हर प्लेट में ऐसा खाना होगा जो दूसरी में न होगा और उसे आख़िरी प्लेट का मज़ा भी इसी तरह आएगा जिस तरह पहली प्लेट का मज़ा आया था।

जन्नत में एक मोती होगा जिसमें सत्तर हज़ार घर होंगे। हर घर में सत्तर हज़ार कमरे होंगे। वहाँ न कोई सूरख़ होगा न फटन व दरार।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जन्नत में एक ऐसी हूर होगी जिसे “ऐना” कहा जाता होगा। जब वह चलेगी तो उसके दाएं-बाएं सत्तर हज़ार खादिमाएं चलेगी। वे हूँ कहती होंगी: कहाँ

हैं वे लोग जो अच्छी बातों का हुक्म दते और बुरी बातों से रोकते थे।

हज़रत यहया बिन मुआज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया: दुनिया का छोड़ना मुश्किल काम है और जन्नत से महसूस रह जाना उससे भी सख्त है। आखिरत का मेहर दुनिया का छोड़ना ही है। तथा यह भी फरमाया: दुनिया के पीछे पड़ना ज़िल्लत का ज़रिया है और आखिरत का तलब करना इज़्ज़त का सबब है। ताज्जुब है उस शख्स पर जो फ़ानी को तलब करके ज़िल्लत पसन्द करता है और बाकी रहने वाली हमेशा की नेमत को तलब न करके इज़्ज़त व रुतबे को छोड़ देता है।

बेनज़ीर और बेपिसाल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया है: मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेमतें तैयार की हैं जो न किसी आँख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा होगा। और तुम चाहो तो गवाही के लिए यह आयते करीमा पढ़ लो:

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ. (السجدة: १७)

यानी जन्नत में ऐसी नेमतें होंगी जिनको किसी आँख ने न देख होगा, न उसके वस्फ़ और ख़ूबी के बारे में किसी कान ने सुना होगा और न ही उसकी हकीकत का किसी दिल पर गुज़र हुआ होगा। यह भी हो सकता है कि यह मुराद हो कि ऐसी ख़ूबसूरत सूरतें होंगी जो किसी आँख ने न देखी होंगी, और ऐसी प्यारी आवाज़ें होंगी जो किसी कान ने न सुनी होंगी, और ऐसे दिल खुश करने वाले ख़्यालात और असबाब होंगे जिनका किसी दिल पर गुज़र न हुआ होगा। वहाँ ऐसी खुशी, सुख और मकसूद व पसन्दीदा चीज़ें हासिल करेंगे। खुशी होगी

जो आँखों की ठण्डक का सबब बनेगी।

जन्नत की कद्र व मरतबा

उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जन्नत में एक कोड़े के बराबर जगह, दुनिया और जो कुछ उसमें है सबसे बेहतर है। इसलिए कि वह हमेशा रहने वाली है। दुनिया अगर किसी को सारी भी मिल जाए तब भी वक्ती व फानी है।

जन्नत की औरतें

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम का निकलना दुनिया और जो कुछ उसमें है सबसे बेहतर है। और अगर जन्नत की औरतों में से एक औरत ज़मीन की तरफ़ झांक ले तो दोनों (यानी जन्नत और दुनिया या आसमान व ज़मीन) के दरमियान का हिस्सा सब रोशन हो जाए और उन दोनों के दरमियान खुशबू महक जाए। और उसके सर का दुपट्टा दुनिया और उसमें जो है सबसे बेहतर है। (१)

अल्लाह के रास्ते में निकलने पर इतना अज़ीम सवाब मिलता है जिसके मुक़ाबले में तमाम दुनिया बेहकीक़त है। जन्नत की औरतें ऐसी ख़ूबसूरत होंगी कि उनके जमाल से सारा जहाँ रोशन हो जाए। जिनके जिस्म की खुशबू और दुपट्टे का यह हाल है खुद वे किस क़द्र हसीन होंगी, इसका अन्दाज़ा इस दुनिया में नहीं हो सकता।

जन्नत का पेड़

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: जन्नत में एक पेड़ है (यानी तूबा) जिसके साय में अगर घुड़सवार सौ साल तक चले तब भी उसको तय न कर सके। और जन्नत में तुममें से एक शख्स की एक कमान के बराबर का फासला इस सबसे बेहतर है जिसपर सूरज निकला या गुरुब हुआ। (१)

यानी इतना बड़ा पेड़ है कि उसकी शाखों के नीचे घुड़सवार सौ साल भी चलता रहे तब भी उसकी शाखें खत्म न हों। साय से दुनिया वाला साया मुराद नहीं है इसलिए कि वहाँ सूरज न होगा।

मोती का खेमा

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: जन्नत में मोमिन के लिए मोती में सूराख करके एक ऐसा खेमा बन जाएगा कि जिसकी चौड़ाई एक रिवायत में है कि उसकी लम्बाई साठ मील की होगी। उसके हर कोने में ऐसी बीवियाँ होंगी जो दूसरों को न देख सकेंगी। मोमिन उन सबसे मिलेगा और दो जन्नतें चाँदी की होंगी उसके बरतन और जो कुछ उसमें है सब चाँदी का होगा। और दो जन्नतें सोने की होंगी, उसके बरतन और जो कुछ उसमें है सब सोने का होगा। और (जन्नत में) बन्दों और अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार के दरमियान जलाल व बड़ाई की चादर आड़ होगी जो अल्लाह तआला ने अपने ऊपर डाली होगी। ये मोमिन वहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे। (२)

जन्नत की हर चीज़ बेनज़ीर है। एक मोती सूराख करके इतना बड़ा खेमा बनाया जायेगा। वहाँ जन्नतियों की बीवियाँ होंगी लेकिन अल्लाह तआला उनके दरमियान ऐसा पर्दा कर देगा कि वे एक दूसरे

को न देख सकेंगी ताकि कोई किसी की आज़ादी, ऐश व आराम और लज़्ज़त उठाने में खलल डालने वाला न हो।

जन्नतुल फिरदौस

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दरमियान है और जन्नतुल फिरदौस उनमें सबसे आला दर्जा है। वहीं से जन्नत की चारों नहरें निकलती हैं। उसके ऊपर अर्श इलाही है, इसलिए तुम जब अल्लाह तआला से जन्नत मांगो तो जन्नतुल फिरदौस मांगा करो। (१)

जन्नत में बहने वाली चार नहरें पानी, दूध, शराब और शहद की होंगी। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى. (سورة محمد: १५)

तर्जुमा: उसमें नहरें हैं पानी की जिसमें बू नहीं होगी और नहरें हैं दूध की जिसका मज़ा फ़िरा नहीं, और नहरें हैं शराब की जिसमें मज़ा है पीने वालों के लिए और नहरें हैं शहीद की झाग उतारा हुआ।

जन्नत के बाज़ार

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जन्नत में एक बाज़ार होगा जहाँ वे हफ़्ते में एक बार जाया करेंगे। उत्तरी हवा चलेगी और उनके चेहरों और कपड़ों में (मुश्क वगैरह की) खुशबू बसा देगी जिससे वे और ज़्यादा

हसीन व जमील हो जाएंगे। अपने घर वालों के पास पहुँचेंगे और पहले से ज्यादा हसीन व खूबसूरत होंगे तो उनकी बीवियाँ उनसे कहेंगी: खुदा की कसम! आप लोग हमसे जुदा होने के बाद तो और ज्यादा हसीन व खूबसूरत बन गए। तो वे उनसे कहेंगे: खुदा की कसम! तुम भी तो हमारे बाद और ज्यादा हसीन व खूबसूरत हो गई हो। (१)

अल्लामा नववी ने लिखा है कि जन्नत में जन्नतियों के लिए एक इकट्ठा होने की जगह होगी जहाँ हफ़्ता भर की मिक़दार में एक बार इकट्ठा हुआ करेंगे। वहाँ हकीकत में हफ़्ता न होगा इसलिए कि वहाँ चाँद-सूरज और रात-दिन न होंगे। दिन-रात का वक़्त अनवारात के पर्दे डालने और उनके उठाने से मालूम होगा जैसा कि बाज़ हदीसों से मालूम होता है। उससे जुमा वग़ैरह का अन्दाज़ा होगा और अल्लाह की ज़ियारत और अपने भाईयों से मुलाक़ात वग़ैरह के वक़्त का अन्दाज़ा करेंगे। उनका हुस्न व खूबसूरती उस हवा की वजह से बढ़ी होगी या उनकी खूबसूरती का अक्स पड़ने या दर्जों की तरक्की और फज़ले खुदावन्दी की वजह से।

जन्नतियों की सिफ़तें

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जन्नत में जो पहली जमाअत दाख़िल होगी उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह रोशन होंगे। फिर उनके बाद दाख़िल होने वाले आसमान पर चमकने वाले रोशन-तरीन सितारे की मानिन्द होंगे। उन सबके दिल एक आदमी के दिल की तरह होंगे, न उनमें इख़िलाफ़ होगा न बुग़ज़ होगा। उनमें से हर शख़्स को दो बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें मिलेंगी जिनकी पिंडलियों

का गूदा लताफत की वजह से हड्डी और गोश्त के बाहर से नज़र आ रहा होगा। जन्नती सुबह व शाम अल्लाह जल्ल शानुहू की पाकी बयान करेंगे। न बीमार होंगे न पेशाब की हाजत होगी, न पाखाने की हाजत होगी, न थूकने की न नाक से गंदगी आयेगी। उनके बरतन सोने-चाँदी के होंगे। उनकी कंधियां सोने की होंगी। उनकी अंगीठियों का ईंधन ऊद होगा। उनका पसीना मुस्क की तरह खुशबूदार होगा। वे सब हम-उम्र एक जैसे होंगे। अपने जदे अमूजद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शकल पर आसमान में साठ हाथ के बराबर होंगे। (१)

हर उस गोरी औरत को कहते हैं जिसकी आँखों का सफ़ेद हिस्सा निहायत सफ़ेद और स्याह हिस्सा निहायत स्याह हो। और अगर इसी कैफ़ियत के साथ आँखें भी बड़ी-बड़ी हों तो हुस्न और बढ़ जाता है। हर मोमिन की इस तरह की दो बीवियाँ मिलेंगी और इसके अलावा दूसरी तरह की और बीवियाँ भी होंगी। बाज़ हज़रात ने कहा है कि हर किस्म की दो-दो मिलेंगी। दुनिया में अंगीठी में कोयला, लकड़ी वगैरह डालकर आग जलाते हैं लेकिन जन्नत में उसके बजाय उनका ईंधन ऊद होगा। उनकी उम्रें एक जैसी तीस-तैंतीस साल होंगी जैसा कि दूसरी रिवायतों में आया है।

जन्नत में अल्लाह की तारीफ़ व पाकी

बयान करना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: जन्नत वाले वहाँ खाएँ पिएँगे। न थूक आएगा, न पेशाब, न पाखाना न नाक की गंदगी। पूछा: खाने (के

फुज़ला) का क्या होगा? (कैसे हज़म होगा?) फरमाया: डकार आएगी और मुश्क की खुशबू वाला पसीना (उससे खाना हज़म हो जाएगा) उनके लिए सुब्हानल्लाह और अल्हम्दु लिल्लाह को इस तरह आसान कर दिया जाएगा जिस तरह तुम्हारे लिए साँस लेने को आसान किया गया है। (१)

यानी जैसे दुनिया में साँस लेना तुम्हारे लिए आसान है। हर वक्त हर शख्स साँस लेता है उसकी वजह से उसपर कोई मशक्कत लाज़िम नहीं आती। न उससे थकता है न कोई मशगला या धन्धा साँस लेने से रोकता है। इसी तरह वहाँ तुम सुब्हानल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ोगे और फरिश्तों की तरह न थकोगे न आज़िज़ होगे। या यह कि यह तस्बीह व तकबीर साँस की तरह तुम्हारा लाज़िमी वस्फ (खूबी और सिफ़त) बन जाएगा।

नाज़ व नेमत की जगह

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: जो शख्स जन्नत में दाखिल होगा नेमत में रहेगा, कभी खस्ता-हाल न होगा। न उसके कपड़े पुराने होंगे न उसकी जवानी ढलेगी। (२)

जन्नत 'दारुल-बका' यानी हमेशा रहने की जगह है इसलिए वहाँ न कपड़े पुराने होंगे न बुढ़ापा आएगा और न ही गुरबत, फ़क्र व फाका और खस्ता-हाली।

जन्नत में बीमारी न होगी

हज़रत अबू सईद व हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से

(१) मुस्लिम शरीफ़ (२) मुस्लिम शरीफ़

रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया: एक पुकारने वाला आवाज़ लगाएगा कि तुम्हारे लिए यह तय है कि हमेशा सेहत-मन्द रहोगे कभी बीमार न होगे, और हमेशा जिन्दा रहोगे कभी मौत न आएगी, हमेशा जवान रहोगे कभी बुढ़ापा नहीं आएगा। और तुम्हारे लिए नेमत ही नेमत होगी कभी खस्ता-हाली न होगी। (१)

सुब्हानल्लाह! कितनी बड़ी नेमत है कि सेहत भी हो, मौत का ग़म भी न हो और जवानी भी हो और राहत व आराम व नेमते। इनका मजमूआ जिसको मिल जाए उसे और क्या चाहिए? दुनिया में किसी के पास दौलत है तो सेहत नहीं, सेहत है तो दौलत नहीं, जवानी है तो माल व दौलत नहीं, माल व दौलत है तो जवानी नहीं। और अगर मान लो ये सब चीज़ें किसी के पास दुनिया में इकट्ठा हो भी जाएं तो किसी वक़्त भी ख़त्म हो सकती हैं, मौत बहर हाल किसी भी वक़्त आ सकती है। जवानी वक़्ती होती है लेकिन जन्नत में ये सब चीज़ें हमेशा के लिए होंगी वहाँ मौत को मार दिया जाएगा अब कभी मौत नहीं आएगी।

जन्नत के बालाख़ाने

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जन्नती ऊपर के बालाख़ाने वालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम पूरब या पश्चिम के उस सितारे को देखते हो जो उफ़ुक (आसमान के किनारे) में डूबता है। यह उनके दर्जों के फ़र्क की वजह से होगा। सहाबा ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के

बालाखाने होंगे जिन तक और कोई नहीं पहुँच सकेगा? फरमाया: क्यों नहीं! कसम है उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, ये वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और उसके रसूल की तसदीक की। (१)

लिखा है कि जन्नत के दर्जों में सबसे ऊँचे दर्जे साविकीन अव्वलीन (जो सबसे पहले ईमान लाये होंगे) के लिए होंगे, और दरमियाने वाले मियाना-रवी इख्तियार करने वालों के लिए और निचले वाले उन लोगों के लिए होंगे जिन्होंने नेकियाँ और गुनाह दोनों किए होंगे।

नरमदिल जन्नती

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जन्नत में कुछ कौमें दाखिल होंगी उनके दिल परिन्दों के दिल की तरह नर्म और रकीक होंगे। (२)

बाज़ हज़रात ने कहा है कि परिन्दों की तरह नरमदिल होंगे। बाज़ हज़रात ने फरमाया है कि अल्लाह तआला के खौफ से दिल काँप रहे होंगे जैसे परिन्दों कमज़ोर दिल के होते हैं। बाज़ हज़रात ने कहा है कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल व भरोसा करने में, क्योंकि परिन्दे सुबह ख़ाली पेट होते हैं शाम को खुदा उन्हें रिज़्क दे देता है।

अल्लाह की रिज़ा

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला जन्नत में जन्नतियों से फरमाएंगे: ऐ जन्नतियो! वे कहेंगे: ऐ परवर्दिगार हम हाज़िर

हैं। तमाम ख़ैर आपके कब्जे में है। फ़रमाएंगे: क्या तुम लोग खुश हो? वे अर्ज करेंगे: ऐ रब! हम क्योंकि खुश न होंगे जबकि आपने हमें वह कुछ अता फरमाया है जो अपनी मख़्लूक में से किसी को अता नहीं किया। फ़रमाएंगे: क्या मैं तुम्हें इससे अफ़ज़ल व आला चीज़ न दूँ? वे अर्ज करेंगे: परवर्दिगार! इससे बेहतर क्या चीज़ होगी? फ़रमाएंगे: मैं तुमसे राज़ी रहूँगा, अब इसके बाद कभी नाराज़ नहीं हूँगा। (१)

लिखा है कि इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में दाख़िले से बढ़कर इनाम अल्लाह तआला की खुशनूदी व रज़ामन्दी होगी। उस रज़ामन्दी में अल्लाह तआला की मुलाकात और नेमत की दूसरी तमाम किस्में शामिल होंगी।

मामूली दर्जे के जन्नती का ठिकाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जन्नत में तुममें से किसी शख्स का सबसे कम दर्जे का ठिकाना यह होगा कि उससे फ़रमाएंगे: तमन्ना करो, वह तमन्ना करेगा। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएंगे: क्या तुमने तमन्ना कर ली? वह कहेगा जी हाँ! फ़रमाएंगे: तुझे उसका दोगुना दिया जाता है जो तूने तमन्ना की है। (२)

जन्नत की चौखट

हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हमसे ज़िक्र किया गया है कि पत्थर जहन्नम की एक तरफ़ से फेंका जायेगा तो वह जहन्नम में सत्तर साल तक गिरता रहेगा लेकिन उसकी तह तक नहीं पहुँच सकेगा। खुदा की कसम उस जहन्नम को भर दिया

जाएगा (यानी काफिरों, मुशिरकों और बुत-परस्तों से) और हमसे यह भी बयान किया गया कि जन्नत की दो चौखटों के दरमियान का फासला चालीस साल की दूरी के बराबर होगा, लेकिन उसपर एक ऐसा वक्त भी आएगा कि वह भीड़ और मजमे की वजह से तंग पड़ जाएगा। (१)

अल्लाह तआला हम सबको जहन्नम से बचाए और अपने फज़ल व करम से जन्नत का हकदार बनाए।

जन्नत की ईंट-गारा

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: मैंने अर्ज किया: ऐ अल्लाह के रसूल! मख़्लूक को किस चीज़ से पैदा किया गया है? फ़रमाया: पानी से। हमने पूछा: जन्नत किस चीज़ से तामीर की गई है? फ़रमाया: एक ईंट सोने की होगी एक ईंट चाँदी की, और उसका गारा खुशबूदार मुश्क का। और संगरेजे (पत्थर के टुकड़े) मोती और याकूत और मिट्टी जाफ़रान की होगी। जो वहाँ दाख़िल होगा नेमत में रहेगा कभी ख़स्ता-हाल न होगा। हमेशा रहेगा मौत नहीं आएगी और न उनके कपड़े पुराने होंगे न उनकी जवानी ख़त्म होगी। (२)

दानिश्वरों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अल्लाह तआला ने जिस्म वाली चीज़ों में से सबसे पहले किस चीज़ को पैदा किया? अक्सर हज़रात की राय यह है कि वह पानी है इसलिए कि इसमें हर चीज़ की सलाहियत है। पानी को कसीफ़ और गाढ़ा करके जमाकर उससे ज़मीन बनाई और आग व हवा पानी को लतीफ़ करके बनाया इसलिए कि पानी लताफ़त के बाद हवा बन जाता है और पानी के निचोड़ से आग बनी और आग के धुएं से आसमान बना। बाज़ हज़रात ने यह कहा है

कि पानी से नुत्फा मुराद है, इस सूरत में मख्लूक से ज़िन्दा मख्लूक मुराद होगी। दुनिया में इमारत ईंट, गारे और लकड़ी से बनाई जाती है, जन्नत में सोने-चाँदी से बनेगी और गारा मिट्टी के बजाय मुश्क होगा।

जन्नत के पेड़ों का तना

हज़रत अबू हुऱैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत के हर पेड़ का तना सोने का होगा। (१)

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुऱैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के दरमियान सौ साल की दूरी का फ़ासला है। (२)

सौ के अदद से मख्सूस यही तादाद मुराद नहीं है बल्कि यह बतलाना है कि बहुत से दर्जे हैं। ज़्यादती ज़ाहिर करने के लिए सौ, सत्तर वगैरह के अदद को इस्तेमाल किया जाता है। ये बुलन्द दर्जे लोगों के अपने-अपने आमाल की वजह से मिलेंगे।

जन्नत के दर्जों की वुसूअत

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, अगर तमाम आलम वाले उनमें से किसी एक में इकट्ठा हो जाएं तो भी वह उनके लिए काफी हो जाए। (३)

इससे जन्नत की वुसूअत बयान करना मकसूद है। हर जन्ती को

(१) तिर्मिज़ी शरीफ। (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको हसन ग़रीब फ़रमाया है। (३) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

निगाह की हद तक महल और बागात मिलेंगे।

उन्हीं से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहु के फरमान मुबारक:

وَفَرْشٌ مَّرْفُوعَةٌ. (الواقعة: २६)

तर्जुमा: 'और ऊँचे फर्श होंगे' के बारे में फरमाया: उनकी बुलन्दी ऐसी होगी जैसी आसमान व ज़मीन के दरमियान है, पाँच सौ साल की दूरी के बराबर। (१)

यानी वे बिस्तर तरतीब से लगे होंगे या मसहरियों पर बिछे होंगे। बड़े नफीस व कीमती होंगे। बाज़ हज़रात ने (फुरुश) से जन्नत की औरतें मुराद ली हैं, यानी जन्नत की औरतें हुस्न व खूबसूरती में दुनियावी औरतों से कहीं बरतर व ऊँची होंगी।

जन्नत की पोशाक

उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: क़ियामत के दिन जो पहली जमाअत जन्नत में दाख़िल होगी उनके चेहरे की चमक चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी। और दूसरी जमाअत आसमान के चमकदार-तरीन सितारे की तरह रोशन व चमकदार होगी। उनमें से हर शख्स को दो बीवियाँ (मख्सूस किस्म की) मिलेंगी उनमें से हर बीवी पर सत्तर पोशाकें होंगी जिनके पीछे से उनकी पिंडली (की हड्डी) का गूदा नज़र आएगा। (२)

यानी उनका लिबास ऐसा बारीक और शफ़्फ़ाफ़ होगा कि उससे उनका हुस्न फूट-फूटकर निकलेगा। वे खुद भी निहायत नाज़ुक मिज़ाज और लतीफ़ होंगी और उनका लिबास भी निहायत लतीफ़ होगा।

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फरमाया है।

(२) तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत वालों की कुव्वत व ताकत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मोमिन को जन्नत में इतनी-इतनी औरतों से हमबिस्तरी की कुव्वत दी जाएगी। अर्ज़ किया गया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उसमें इतनी ताकत होगी? फ़रमाया: सौ आदमियों की ताकत दी जाएगी। (१)

जन्नतियों के कंगन

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने फ़रमाया: अगर जन्नत की नेमतों में से एक नाखून के बराबर भी (दुनिया में) ज़ाहिर हो जाए तो पूरब व पश्चिम के दरमियान सब हिस्सा रोशन व मुज़ैयन हो जाए। और अगर जन्नत वालों में से कोई शख्स झांक ले और उसका कंगन ज़ाहिर हो जाए तो उसकी रोशनी सूरज की रोशनी को इस तरह ख़त्म कर दे जिस तरह सूरज सितारों की रोशनी को ख़त्म कर देता है। (२)

ज़ाहिर है कि वहाँ की चीज़ों की चमक-दमक ऐसी होगी कि उनके सामने सूरज की रोशनी मांद पड़ जाए, जैसे दुनिया में सूरज के सामने चाँद सितारे मांद पड़ जाते हैं और साठ या चालीस वोल्ट का बल्ब हजारों वोल्ट के सामने टिमटिमाने लगता है।

जन्नतियों का हुस्न व ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: जन्नत वाले बेबाल व

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़ (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

बेदाढ़ी और सुरमगीन आँखों वाले होंगे। उनकी जवानी खत्म नहीं होगी न उनके कपड़े पुराने होंगे। (१)

यानी उनके जिस्म पर फालतू बाल न होंगे। वे बेदाढ़ी वाले जवान होंगे, बगैर सुरमा लगाए उनकी आँखें हमेशा सुरमगी रहेंगे।

जन्नत वालों की उम्रें

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जन्नत वाले जन्नत में इस हालत में दाख़िल होंगे कि उनके जिस्म बेबाल वाले और वे बेदाढ़ी वाले और सुरमगी तीस या तैंतीस साल के होंगे। (२)

तीस तैंतीस साल की उम्र जवानी की भरपूर उम्र और कुव्वत के कमाल और पुख़्तगी का ज़माना होता है। वहाँ चूँकि हर चीज़ कामिल होगी इसलिए मोमिनों की उम्र भी यही होगी।

सिद्रतुल-मुन्तहा

हज़रत असमा बन्ते अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरतामी हैं: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आपने सिद्रतुल-मुन्तहा का तज़क़िरा किया, फ़रमाया: माहिर घुड़सवार उसकी टहनियों के साय में सौ साल सफ़र करेगा, या यह फ़रमाया: कि सवार आदमी उसके साय में सौ साल तक चलता रहेगा, उसमें सोने के परवाने हैं, उसके फल मटके के बराबर हैं। (३)

सिद्रतुल-मुन्तहा सातवें आसमान पर अर्श की दाईं जानिब एक पेड़ है उसको मुन्तहा इसलिए कहते हैं कि वह जन्नत के मुन्तहा (अख़ीर) में है, या इसलिए कि उससे आगे कोई न जा सका। फ़रिश्तों

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़, दारमी शरीफ़ (२) तिर्मिज़ी शरीफ़ (३) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

वगैरह का इल्म भी वहीं खत्म हो जाता है, उसके बाद क्या है उसे अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। परवानों के बारे में बाज़ हज़रात ने यह कहा है कि उससे फरिश्ते मुराद हैं जिनके पर इस तरह चमक रहे होंगे जैसे परवानों के पर चमकते हैं।

हौज़े कौसर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कौसर के बारे में दरियाफ्त किया गया कि वह क्या चीज़ है? फरमाया: वह एक नहर है जो अल्लाह तआला ने मुझे जन्नत में अता फरमाई है। वह दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठी है। उसमें ऐसे परिन्दे हैं जिनकी गर्दनें ऊँटों की गर्दनों की तरह हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: ये परिन्दे तो बड़े लज़ीज़ होंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: उनके खाने वाले उनसे भी अच्छे हैं। (१)

यह वही हौज़े कौसर है जिसका तज़क़िरा कुरआन करीम में सूर: कौसर में मौजूद है। उसपर मोमिन जाएंगे, सितारों से ज़्यादा वहाँ जाम रखे होंगे। जो वहाँ से एक बार पी लेगा फिर कभी प्यासा न होगा। उस नहर पर आने वाले ऐसे परिन्दे होंगे जो निहायत पुर-गोश्त और लज़ीज़ होंगे, और क्यों न हों जबकि यह रब्बे जुलजलाल की मेज़बानी है।

जन्नत के घोड़े

हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक साहिब ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में घोड़े भी होंगे?

फरमाया: अगर अल्लाह तआला ने तुम्हें जन्नत में दाखिल फरमा दिया तो तुम अगर यह चाहोगे कि वहाँ तुम्हें सुख मोती के ऐसे घोड़े पर सवार कर दिया जाए जो तुम्हें जन्नत में वहाँ लेकर उड़े जहाँ तुम चाहो तो यह भी हो जाएगा। एक साहिब ने आपसे पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में ऊँट भी होंगे? फरमाया: उनसे आपने वह बात न फरमाई जो उनके दूसरे साथी से फरमाई थी, यह फरमाया: अगर अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत में दाखिल फरमाएंगे तो तुम्हें वह सब मिलेगा जो तुम्हारा नफ्स चाहेगा और तुम्हें अच्छा लगेगा। (१)

यानी जन्नत में इन्सान जो माँगेगा वह उसे मिलेगा। और जन्नत की लाजवाब सवारियाँ तुम्हें दुनिया की सवारियों से बेनियाज़ कर देंगी।

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक देहाती नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल: मुझे घोड़ा पसन्द है क्या जन्नत में घोड़ा होगा? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया: अगर तुम्हें जन्नत में दाखिल कर दिया गया तो तुम्हारे पास याकूत का बना हुआ एक घोड़ा लाया जाएगा जिसके दो पर लेगे होंगे, तुम्हें उसपर सवार कर दिया जाएगा, फिर तुम जहाँ चाहोगे वह तुम्हें लेकर उड़ता फिरेगा। (२)

जन्नत के घोड़े दुनियावी घोड़ों की तरह न होंगे बल्कि वे याकूत के बने हुए उड़ने वाले पिरन्दे होंगे, देखते ही देखते इधर से उधर पहुँचा देंगे।

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़ (२) इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसकी सनद को ग़ैर कवी बताया है। इस हदीस के एक रावी अबू सोरा को ज़ईफ़ करार दिया गया है।

जन्नतियों की सफ़ें

हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें से अस्सी सफ़ें इस उम्मत की और बाकी चालीस सफ़ें और दूसरी उम्मतों की होंगी। (१)

यह अल्लाह तआला का इस उम्मत पर अज़ीम इनाम और बहुत बड़ा फज़ल व करम है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत की बड़ी तादाद को जन्नत का हक़दार बनाया और अपने महबूब की उम्मत की अक्सरियत को जहन्नम की ज़िल्लत और रुस्वाई से नजात दी।

जन्नत का दरवाज़ा

हज़रत सालिम अपने वालिद माजिद हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: मेरी उम्मत का वह दरवाज़ा जिससे वे जन्नत में दाख़िल होंगे उसकी चौड़ाई बेहतरीन घुड़सवार की तीन दिन की दूरी के बराबर होगा। फिर भी उम्मते मुहम्मदिया उसपर इतना हुजुम करेगी कि क़रीब होगा कि भीड़ की ज़्यादती की वजह से उनके कांधे उखड़ जाएँ। (२)

यानी ऐसा माहिर घुड़सवार जो घुड़दौड़ से ख़ूब वाकिफ़ हो, वह अगर अपने घोड़े को तीन दिन या तीन साल तक दौड़ाता रहे तो जितनी दूरी तक वह तीन दिन या तीन साल में पहुँचेगा उससे भी बड़ी चौड़ाई वाला जन्नत का दरवाज़ा होगा। मुराद यह मख़सूस मिक्दार

(१) इसको इमाम तिर्मिज़ी और दारमी ने रिवायत किया है, और इमाम वैहकी ने किताब 'अल-बअस वन्नुशूर' में बयान किया है। (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ज़ईफ़ करार दिया है।

(मात्रा) नहीं बल्कि बतलाना यह मकसूद है कि वह दरवाज़ा निहायत चौड़ा होगा लेकिन अल्लाह के फज़ल व करम से मेरी उम्मत के जन्नत के हक़दार इतने ज़्यादा होंगे कि वह दरवाज़ा भी उनके लिए तंग पड़ जाएगा और भीड़ की ज़्यादती की वजह से काँधा मिला जा रहा होगा।

जन्नत में ख़रीद व बेच

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में एक ऐसा बाज़ार होगा जिसमें ख़रीद व बेच न होगी, वहाँ सिर्फ़ मर्दों और औरतों की तसवीरें होंगी। इन्सान जिस सूरत को पसन्द करेगा उसको वही दे दी जाएगी। (१)

यानी वहाँ दुनिया की तरह ख़रीद व बेच न होगी बल्कि इससे या तो यह मुराद है कि इन्सान को उन सूरतों में से जो सूरत पसन्द आएगी इन्सान को वैसा ही बना दिया जाएगा, या इससे यह मुराद है कि लिबास, पोशाक और ताज व जवाहिरात पेश होंगे, जिस किस्म के उसे पसन्द होंगे वही उसे पहना दिए जाएंगे। इसी तरह औरतें जो शक्ल व सूरत पसन्द करेंगी उनको वैसा ही बना दिया जाएगा। जिस किस्म के लिबास और ज़ेवर का इन्तिखाब (चुनाव) करेंगी उन्हीं उससे सजा दिया जाएगा।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मिले तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह तआला से यह दुआ माँगो कि मुझे और तुम्हें जन्नत के बाज़ार में जमा फ़रमा दे, हज़रत सईद ने अर्ज किया: क्या वहाँ बाज़ार होगा? फ़रमाया: जी हाँ! मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ग़रीब करार दिया है।

सल्लम ने यह ख़बर दी है कि जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक जन्नत में बुलन्द दर्जों में उतरेंगे। फिर दुनियावी हफ़ता भर की मिक़दार गुज़रने पर अपने रब की ज़ियारत करेंगे। उनके सामने उसका अर्श ज़ाहिर होगा और अल्लाह तआला जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएंगे। जन्नतियों के लिए नूर मोतियों, याकूत, ज़बरजद, सोने और चाँदी के मिंबर रख दिए जाएंगे उनमें कमतर दर्जे वाले भी (हालाँकि उनमें कम दर्जे का कोई भी न होगा) मुश्क और काफ़ूर के टीलों पर बैठे होंगे। वे यह महसूस न करेंगे कि कुर्सियों और मिंबर पर बैठने वाले उनसे बड़े मक़ाम के मालिक हैं। (ताकि किसी ग़म व मलाल में गिरफ़्तार न हों)

हज़रत अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने परवर्दिगार को देखेंगे? फ़रमाया: क्या तुम चौदहवीं रात के चाँद और सूरज के देखने में कुछ शक व शुब्हा करते हो? हमने कहा: जी नहीं! फ़रमाया: इसी तरह तुम अपने परवर्दिगार के देखने में भी कोई शक व शुब्हा नहीं करोगे। और उस मज्लिस में मौजूद हर शख्स से अल्लाह तआला (बिला पर्दे और बिला तर्जुमान) कलाम फ़रमाएंगे, यहाँ तक कि उनमें से एक आदमी से फ़रमाएंगे:

फ़लाँ बिन फ़लाँ! क्या तुम्हें याद है फ़लाँ-फ़लाँ दिन तुमने यह बात कही थी और उसे बाज़ दुनियावी उज़्र व ख़ियानतें याद दिलाएंगे। वह शख्स कहेगा: परवर्दिगार क्या आपने मेरी मग़फ़िरत न फ़रमा दी थी? फ़रमाएंगे क्यों नहीं! मेरी मग़फ़िरत की वजह से ही तुम इस मर्तवा तक पहुँचे हो। वे इस हालत ही में होंगे कि एक बादल ऊपर से उन्हें घेर लेगा और उनपर ऐसी खुशबू की बारिश करेगा कि वैसी खुशबू

उन्होंने कभी न सूंघी होगी। अल्लाह जल्ल शानुहू इर्शाद फरमाएंगे: जाओ जाकर देखो मैंने तुम्हारे इकराम व सम्मान के लिए कैसी-कैसी नेमते तैयार कर रखी हैं, वहाँ से जो लेना चाहो ले लो। हम एक ऐसे बाज़ार में आएंगे जिसे फरिश्तों ने घेर रखा होगा। वहाँ ऐसी-ऐसी नेमते होंगी कि उस जैसी नेमते किसी आँख ने न देखी होगी न किसी कान ने उनके बारे में सुना होगा और न किसी दिल पर उनका ख्याल भी गुज़रा होगा। हमारे लिए वहाँ से वे चीज़ें उठा ली जाएंगी जो हम पसन्द करेंगे, वहाँ ख़रीद व फ़रोख़्त न होगी।

उस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मिलेंगे। फ़रमाया: एक बड़े दर्जे वाला अपने से कम दर्जे वाले से मिलेगा हालाँकि वहाँ कोई भी कमतर न होगा। उस लिबास पोशाक हैरान कर देगा, अभी उसका यह ख्याल ख़त्म भी न होने पायेगा कि उसे महसूस होगा कि उसका लिबास उस शख्स से ज़्यादा बेहतर है। यह इसलिए कि वहाँ कोई शख्स ग़मगीन न होगा। फिर हम अपने-अपने ठिकानों की तरफ़ चले जाएंगे। वहाँ हमारी बीवियाँ हमें खुश आमदीद कहेंगे (यानी स्वागत करेंगी) और कहेंगी: आप हमारे पास से जाते वक़्त इतने ख़ूबसूरत न थे अब तो पहले से बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत हो गए हैं। हम कहेंगे: आज हम अपने परवर्दिगार जुलजलाल के साथ बैठे थे इसलिए हमारा इतना ख़ूबसूरत होना हमारे लिए बिल्कुल दुरुस्त है। (१)

जमाले हमनशीं दर मन असर कर्द

व गरना हमा खाकम कि हस्तम

जन्नत वालों के खादिम व बीवियाँ

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ग़रीब करार दिया है।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: जन्नत में कम से कम दर्जे वाले को अस्सी हजार ख़ादिम और बहत्तर बीवियाँ मिलेंगी और उसके लिए मोती, ज़बरजद व याकूत का एक इतना बड़ा कुब्बा लगा दिया जाएगा जितना फ़ासला (मुल्क शाम के शहर) जाबिया और (मुल्क यमन के शहर) सुनआ के दरमियान है।

जन्नती का हर तरह से इकराम होगा जैसे दुनिया में ख़ादिम और नौकर-चाकर इन्सान की बड़ाई, वजाहत और मालदारी की अ़लामत (निशानी) होते हैं इसी तरह जन्नतियों के सम्मान के लिए अल्लाह तआला उन्हें इतने ख़ादिम अ़ता फ़रमाएंगे और उनके दिल खुश करने के लिए इतनी बीवियाँ होंगी।

जन्नतियों की उम्र

इसी सनद से रिवायत किया गया है। फ़रमाया: जन्नतियों में से हर छोटे-बड़े को जन्नत में तीस साल का जवान बना दिया जाएगा। वह हमेशा इस उम्र के रहेंगे कि कभी इससे ज़्यादा उम्र के न होंगे और यही हाल दोज़खियों का भी होगा, यानी उनकी जवानी, बदन के अंग, बालों वगैरह में से किसी चीज़ में बदलाव नहीं आएगा।

जन्नतियों के ताज

इसी सनद के रिवायत है। फ़रमाया: उनके (सरोँ पर) ऐसे ताज होंगे जिनमें मामूली सा मोती भी ऐसा चकमदार होगा जिससे पूरब व पश्चिम के दरमियान का आम हिस्सा रोशन हो जाए।

यह सिला होगा उनकी लिल्लाहियत, इताअते खुदावन्दी, रियाज़त और मुजाहदे और नेक आमाल का, और सबसे बड़ी वजह अल्लाह जल्ल शानुहु का फज़ल होगा कि उसने इन्सान को उस जन्नत का

अहल बनाया और तौफीक दी और फिर उस सम्मान व इकराम से नवाज़ा।

जन्नती के यहाँ गर्भ और पैदाइश

इसी सनद से यह भी रिवायत है। फ़रमाया: मोमिन जन्नत में जब बच्चे की तमन्ना करेगा तो उसका गर्भ और बच्चे की पैदाइश और उम्र के कमाल को पहुँचना जैसे ही चाहेगा सब ज़रा सी देर में हो जाएगा।

यानी वहाँ हर चीज़ हुक्म और इशारे के ताबे होगी। दुनिया की तरह धीरे-धीरे कोई काम न होगा, दिल में ख़्याल आया और अल्लाह तआला की तरफ़ से उसकी तकमील हो गई।

इसहाक़ बिन इब्राहीम इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि मोमिन जन्नत में जब बच्चे की ख़्वाहिश करेगा तो ज़रा सी देर में हो जाएगा लेकिन वह यह तमन्ना ही न करेगा। (१)

हूरों के जमा होने की जगह

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जन्नत में हूरों की एक जमा होने की जगह होगी। वे ऐसी प्यारी आवाज़ से नीचे दिए गए शे'र पढ़ेंगी जैसी आवाज़ किसी ने कभी भी न सुनी होगी। कहेंगी:

نحن الخالدات فلا نبید ونحن الناعمات فلا نبأس

तर्जुमा: हम हमेशा रहने वालीयाँ हैं कभी ख़त्म न होंगी। हम नाज़ व नेमत में रहने वालीयाँ हैं कभी ख़स्ता-हाल न होंगी।

نحن الراضيات فلا نسخط طوبى لمن كان لنا وكناله

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ग़रीब करार दिया है।

तर्जुमा: हम राज़ी व खुश रहने वालियाँ हैं कभी नाराज़ न होंगी। भलाई हो उसके लिए जो हमारा बन गया और हम उसके हो गए।

यानी हम दुनियावी औरतों की तरह नहीं जिनका हुस्न आरिज़ी व फ़ानी, जिनके नाज़ व करिश्मे वक्ती और खुशनूदी रेत की चमक होती है, उम्र ढलने के साथ हुस्न व ख़ूबसूरती रुख़्सत और वक़्त गुज़रने के साथ मिज़ाज चिड़चिड़ा और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बात होने पर नाक-भौं चढ़ाना, नहीं! हम हमेशा-हमेशा सदाबहार जवान रहेंगी, हसीन और ख़ूबसूरत रहेंगी, हमेशा अपने शौहरों की आँखों की ठण्डक बनेंगी और उनसे कभी नाराज़ न होंगी। हर वक़्त उनके लिए आंखें बिछाए रहेंगी। वाकई वे जिसकी होंगी वह बड़ा खुशनसीब होगा और जो उसके हिस्से में आएगा वह बड़ा सआदत मन्द होगा। और यह उनकी खुश-किस्मती होगी। एक रिवायत में है कि वे यह कहेंगी कि हम ऐसी राज़ी रहने वालियाँ हैं कि कभी नाराज़ न होंगी और ऐसी हमेशा रहने वालियाँ हैं कि कभी कूच न करेंगी। एक रिवायत में है कि हूरें जन्नत में यह पढ़ेंगी कि हम निहायत ख़ूबसूरत गोरी-गोरी हूरें हैं, हमें निहायत सम्मानित व मुकर्रम शौहरों के लिए छुपाकर रखा गया है।

चार दरिया

हज़रत हकीम बिन मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में पानी, शहद, दूध और शराब के बड़े-बड़े दरिया होंगे, बाद में फिर उनमें से नहरें निकलेंगी। (१)

यानी जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो उनसे नहरें निकल-निकल कर जन्नतियों के महलों में पहुँचेंगी। हर शख्स को चारों

नहरों से सैराब किया जाएगा और चारों नहरें हर शख्स के कब्जे में रहेंगी।

जन्नत की औरत

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जन्नती जन्नत में एक जगह पर वहाँ से हटने से पहले सत्तर तकियों पर टेक लगाए होगा। फिर उसके पास एक औरत आएगी (नाज़ से) उसके काँधे पर हाथ मारेगी। वह उसकी तरफ़ देखेगा तो उसे अपना चेहरा (उस औरत के चेहरे में) आईने से ज़्यादा साफ़ शफ़ाफ़ मालूम होगा। उसके जिस्म पर कम से कम दर्जे का मोती भी ऐसा चमकदार होगा कि वह पूरब व पश्चिम के दरमियान तमाम हिस्से को रोशन व मुनब्बर कर दे। वह औरत उस जन्नती को सलाम करेगी, वह उसके सलाम का जवाब देगा और उससे पूछेगा: तुम कौन हो? वह कहेगी: मैं और ज़्यादा (इकराम व सम्मान) में से हूँ। उस औरत के जिस्म पर सत्तर पोशाकें होंगी लेकिन फिर भी उस जन्नती की निगाह उसके जिस्म तक पहुँचेगी, यहाँ तक कि उसे उन पोशाकों के बाहर से उस औरत की पिंडली का गूदा नज़र आएगा। उसने ऐसे ताज पहने होंगे कि उनका मामूली सा हीरा भी पूरब व पश्चिम के दरमियान हर चीज़ को मुनब्बर कर दे। (१)

अल्लाह तआला-कुरआन करीम में फरमाते हैं:

وَفُرُشٌ مَّرْقُوعَةٌ. (الواقعة: २६)

तर्जुमा: और ऊँचे फर्श होंगे।

यानी तह-बतह बिस्तरे लेगे होंगे। जन्नती उसपर बड़ी शान से बैठा होगा, उसी दौरान एक औरत नाज़ व नख़रे से उसके काँधे पर

हाथ मारेगी। उसे देखकर उसकी आँखें चकाचौंद हो जाएंगी। उसके हुस्न व खूबसूरती से जन्नती हैरान होकर उससे पूछेगा: तुम कौन हो? तो उसका जवाब यह होगा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा सम्मान व इकराम तथा और ज्यादा इनामात का जो वायदा किया था मैं उसमें से हूँ। अल्लाह तआला ने तुम्हें उस फज़ीलत से नवाज़ा है। इर्शाद है:

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ (ق: २०)

तर्जुमा: उन लोगों को वहाँ सब कुछ मिलेगा जो वे चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ायद है।

फरमाया.

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ. (يونس: २६)

तर्जुमा: जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भला ही है और उसके अलावा भी।

जन्नत होगी, दीदारे खुदावन्दी होगा, तरह-तरह की नेमतें और किस्म-किस्म की दिल लुभाने वाली चीज़ें होंगी। दुनिया में नेक आमाल पर जो वायदे फरमाए थे वे पूरे करने के बाद अल्लाह तआला अपनी तरफ से मोमिनो का मुख्तलिफ़ चीज़ों से इकराम फरमाएंगे, उनमें से एक इकराम यह हसीन व खूबसूरत औरत भी होगी।

खेती-बाड़ी

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह बयान फरमा रहे थे, आपके पास एक देहाती भी बैठे हुए थे, कि एक जन्नती ने अपने परवर्दिगार से खेती-बाड़ी की इजाज़त माँगी, अल्लाह जल्ल शानुहू ने उससे फरमाया: क्या तुम जो चाहते हो वह तुम्हें मिलता नहीं है? उसने कहा: क्यों

नहीं! अलबत्ता मेरा दिल चाहता है कि मैं काश्तकारी करूँ। चुनाँचे वह बीज बोएगा और आँख झपकने से पहले वह उग जाएगा और खेती पक कर और कटकर तैयार और पहाड़ के बराबर उसका ज़खीरा लग जाएगा। अल्लाह तआला फरमाएंगे: ऐ इब्ने आदम: लो (तमन्ना पूरी कर लो) तुम्हारा पेट तो किसी चीज़ से भरता ही नहीं है। उन देहाती ने कहा: बख़ुदा! वह कोई कुरैशी या अन्सारी ही होगा इसलिए कि यही लोग खेती-बाड़ी करने वाले हैं, हम तो काश्तकारी करते नहीं हैं। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम मुसकुरा दिए। (१)

यानी जन्नत में इन्सान जो चाहेगा आनन-फ़ानन ज़रा सी देर में एक लम्हे में हो जाएगा। इन्सान का पेट किसी चीज़ से नहीं भरता, एक ख्वाहिश पूरी होती है तो दूसरी की तमन्ना पैदा हो जाती है। अल्लाह तआला फरमाएंगे कि जन्नत में हर तरह की नेमत, राहत व आराम और तरह-तरह की रंगीनियाँ मौजूद हैं लेकिन फिर भी काश्तकारी का शौक है, लो इसे भी पूरा कर लो। इस हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस जानिब इशारा भी फरमाया है कि इन्सान जिस धन्धे में लगा होता है वही उसपर ग़ालिब रहता है, उसकी तमन्ना व ख्वाहिश लाहिक होती है। बरतन में जो पानी होता है वही उसमें से टपकता है। इसलिए इन्सान को दुनिया की मुहब्बत, उसकी चीज़ों से ताल्लुक के बजाय अल्लाह जल्ल शानुहू से ताल्लुक पैदा करना चाहिए। उसके दीन की सरबुलन्दी की कोशिश में मगन रहना चाहिए।

जन्नत में नींद न होगी

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: एक साहिब ने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा: क्या जन्नती सोएंगे? फरमाया: नींद मौत की बहन है और जन्नत वाले कभी मरेंगे नहीं। (१)

अल्लाह तआला का दीदार

अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की दीदार मुम्किन है। अक्ली एतिबार से नामुम्किन नहीं और इसपर सब एक राय हैं कि आखिरत में मोमिनों को दीदारे इलाही हासिल होगा, काफिर उससे महसूस रहेंगे। बाज़ अहले विद्अत, मोतज़िला, ख़्वारिज और बाज़ मर्जिया यह कहते हैं कि मख़्लूक ख़ालिक को नहीं देख सकती और दीदारे इलाही अक्ली तौर पर नामुम्किन है, यह अक्लीदा बिल्कुल ग़लत और खुली जहालत है। किताबुल्लाह, अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा व ताबिईन व तमाम अगले-पिछले उलमा व बुजुगै इस पर एकमत हैं कि अल्लाह तआला का दीदार होगा। बीस से जायद सहाबा ने इसे रिवायत किया है। दुनिया में अल्लाह तआला का दीदार मुम्किन है लेकिन उलमा और बुजुर्गों की अक्सरियत का मज़हब यह है कि दुनिया में न होगा।

चौदहवीं का चाँद

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: तुम लोग अपने परवर्दिगार को साफ़-साफ़ देखोगे। एक रिवायत में आता है: हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे कि आपने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फरमाया: तुम अपने परवर्दिगार को इस तरह देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो। उसके देखने में

(१) इस हदीस को बैहकी ने 'शोअबुल ईमान' में रिवायत किया है।

ज-भाड़ (धक्कम पेल) न करोगे। अगर तुम यह कर सको कि सूरज निकलने और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ के बारे में मग़लूब न हो तो ऐसा कर लो, फिर यह आयत करीमा तिलावत की:

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا. (طه: १३०)

तर्जुमा: और अपने परवर्दिगार की तस्वीह करते रहिए तारीफ़ के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके ग़रूब होने से पहले। (१)

मालूम हुआ कि जो शख्स पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी करेगा वह अपने परवर्दिगार को देखेगा। मग़लूब न होने का मतलब यह है कि किसी काम-काज की वजह से फ़ज़्र व अस्त्र को ज़ाया मत करो चूंकि आम तौर से फ़ज़र नींद की नज़्र हो जाती है और अस्त्र सैर व तफ़रीह और ख़रीद व फ़रोख़्त के, इसलिए उनके एहतिमाम का और ज़्यादा हुक्म दिया ताकि ज़ौक व शौक से पाबन्दी करें।

पर्दा हटा दिया जाएगा

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे: क्या तुम कुछ और भी चाहते हो? वे कहेंगे: क्या आपने हमें सुख़-रू नहीं फ़रमाया? क्या आपने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया और जहन्नम से नजात अता नहीं फ़रमाई? फ़रमाया: हिजाब (पर्दा) हटा दिया जाएगा और वे अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार करेंगे, उन्हें अपने परवर्दिगार के दीदार से ज़्यादा कोई और चीज़ महबूब और प्यारी नहीं होगी। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई:

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ. (يونس: २६)

तर्जुमा: जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भलाई है और उसके अलावा भी।

यानी अल्लाह तआला जब उनसे किसी और चीज़ की भी तमन्ना का सवाल करेंगे तो वे कहेंगे कि आपने हमें अपनी इतनी अज़ीम नेमतों से नवाज़ा है, इससे बढ़कर और नेमत क्या होगी? जन्नत में तमाम नेमतें, आराम और राहतें हासिल हैं। उसपर अल्लाह तआला उनकी आँखों से हिजाब (पर्दा) हटा देंगे और तजल्ली से नवाज़ेंगे जो सबसे बड़ी नेमत और सबसे ज़्यादा खुश करने वाली दौलत होगी। अल्लाह तआला हमको भी इसका मुस्तहिक बनाएं।

सबसे कम और सबसे बड़े दर्जे वाला जन्नती

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला शख्स वह होगा जो अपने बागात, बीवियों, ऐश व आराम की चीज़ों, खादिमों, मसहरियों को एक हज़ार साल की दूरी के बराबर फैला देखेगा और अल्लाह तआला के यहाँ जो सम्मनित व इकराम वाला होगा वह अल्लाह तआला का सुबह व शाम दीदार करेगा। फिर यह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई:

وَجُودٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ، إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ. (القيامة: २२, २३)

तर्जुमा: कितने ही चेहरे उस दिन खुश और खिले हुए होंगे और अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे।

यानी उसको इतनी बड़ी मिकदार (मात्रा) में बागात, हूरें और दूसरी नेमतें लिमेंगी जो हज़ार साल की दूरी के बराबर फ़ासले पर

फैली हुई होंगी। कम दर्जे वाले जन्नती की बादशाहत का यह हाल है तो फिर बड़े दर्जे वाले का क्या हाल होगा खुद अन्दाज़ा कर लीजिए। उसकी हुक्मत व बादशाहत बहुत बड़ी होगी और साथ ही वे अपने परवर्दिगार के दीदार में ऐसे मगन और खोए हुए होंगे कि किसी और की तरफ तवज्जोह न करेंगे। अल्लाह तआला की मारिफत रखने वाले दुनिया में भी उसमें ऐसा फना और मुन्हमिक होते हैं कि उन्हें दुनिया तो दुनिया अपनी भी फिक्र नहीं रहती, तो फिर भला जब दीदारे खुदावन्दी हो तो उसमें खो जाने और डूब जाने का क्या आलम होगा? इसको ऊपर दर्ज की हुई आयत में बयान किया गया है।

अल्लाह तआला के दीदार की नज़ीर

हज़रत अबू रज़ीन अकीली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने अर्ज किया: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हममें से हर शख्स कियामत के दिन बिना किसी रुकावट के यक्ता व तन्हा होकर अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार करेगा? फ़रमाया: क्यों नहीं! मैंने पूछा उसकी नज़ीर किया है? फ़रमाया: ऐ अबू रज़ीन! क्या तुममें से हर शख्स चौदहवीं रात के चाँद को बिना किसी रुकावट के अपनी-अपनी जगह पर नहीं देखता है? उन्होंने अर्ज किया: क्यों नहीं, फ़रमाया: वह तो अल्लाह तआला की मख़्लूक में से एक मख़्लूक है, अल्लाह जल्ल शानुहू तो उससे बहुत बड़े रुतबे वाले और बहुत बड़ी शान व इज़्ज़त वाले हैं। (१)

हज़रत अबू रज़ीन रज़ियल्लाहु अन्हु को इश्काल यह था कि इतने बड़े मजमे और सारे आलम के इकट्ठा होने के बाद सब एक ही वक़्त में दीदारे खुदावन्दी किस तरह कर सकेंगे? इसी लिए उसकी किसी दुनियावी मिसाल व नज़ीर का सवाल किया तो नबी-ए-करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके जवाब में यह फ़रमाया कि जिस तरह सारी दुनिया अपनी-अपनी जगह पर बिना किसी को तक्लीफ़ पहुँचाए धक्कम पेल किए बग़ैर चाँद को अच्छी तरह से देख लेता है, कोई भी दूसरे के देखने में रुकावट नहीं बनता इसी तरह अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार से हर शख़्स अपनी-अपनी जगह लुत्फ़ व लज़्ज़त हासिल करेगा और यह सबसे बड़ी नेमत होगी।

नूर ही नूर

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा: क्या आपने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार क्या है? फ़रमाया: “नूरुन अन्ना अराहु” (वह तो) नूर हैं मैं उन्हें किस तरह देख सकता हूँ। (१)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू नूरों के नूर और सबसे बड़े नूर हैं।
इशार्द है:

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ۔ (النور: २०)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी ज़ात के एतिबार से ज़ाहिर हैं, दुनिया का ज़रा ज़रा उनके वजूद पर दलालत करता है, दुनिया को मुनव्वर व रोशन करने वाले अल्लाह तआला ही हैं, अल्लाह जल्ल शानुहू के नूर को देखना किसके बस की बात है। अल्लाह जल्ल शानुहू ने नूर को अपने और बन्दों के दरमियान हिजाब (आड़ और पर्दा) बनाया हुआ है, जिस तरह अंधेरा देखने के दरमियान रुकावट बनता है इसी तरह तेज़ रोशनी भी आँखों को चकाचौद कर देती है और आँखें उसके देखने से अज़िज़ आ जाती हैं। तो मायने यह हुए कि वह तो नूर हैं, मैं भला उन्हें किस तरह देख सकता हूँ।

या इसके मायने ये हैं कि मैंने सिर्फ नूर ही नूर को देखा जाते बारी तआला को न देख सका, नूर जाते इलाही के दीदार के दरमियान रुकावट बन गया, मैंने एक बड़ी पुरनूर जात की जियारत की है।

अल्लाह तआला की जियारत

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा ने नीचे लिखी गयी आयत के बारे में फरमाया:

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَاهُ.....وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَى. (النجم: ११-१२)

तर्जुमा: दिल ने कोई ग़लती नहीं की देखी हुई चीज़ में.....और उन्होंने उसको एक बार और भी देखा है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू को अपने दिल के ज़रिए से दो बार देखा है। तिर्मिज़ी की रिवायत में है। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को देखा है। हजरत इक्रमा ने फरमाया: मैंने अर्ज़ किया: क्या अल्लाह तआला यह नहीं फरमाते हैं:

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ. (الانعام: १०३)

तर्जुमा: उसे निगाहें नहीं घेर सकतीं और वह निगाहों को घेरे हुए है।

उन्होंने फरमाया: ताज्जुब है तुमपर! यह उस वक़्त के लिए है जब वह अपने उस मख्सूस नूर के साथ तजल्ली फरमाएं जो उनका जाती नूर है, और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को दो बार देखा है। (१)

इसरा व मेराज की रात नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार किया था या नहीं? इसके

बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह नक़ल किया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस रात अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार नहीं किया था। ऊपर दर्ज दोनों आयतों में जिस दीदार का तज़क़िरा है उससे मुराद है हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम को देखना। लेकिन ज़महूर इस बात के कायल हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ियारत की है, किस तरह की? उसके बारे में बाज़ हज़रात इस बात के कायल हैं कि यह ज़ियारत दिल से थी आँख से न थी, और बाज़ हज़रात आँखों से देखने के कायल हैं और यही सही है। हज़रत इक्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु के इश्काल के जवाब में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बतलाया कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू अपने असल नूर के साथ तजल्ली फ़रमाएं तो उस वक़्त इदराक (रसाई और पाना) नहीं हो सकता लेकिन अगर इतनी मिक्दार (मात्रा) में तजल्ली फ़रमाएं जिसे इन्सानी कुव्वत बर्दाश्त कर सके तो ऐसी सूरत में उसका इदराक हो सकता है।

हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम

हज़रत शअबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अरफ़ा में हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से मिले और उनसे किसी चीज़ के बारे में पूछा। हज़रत कअब ने इतने ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहा कि उनकी आवाज़ पहाड़ों से टकरा कर वापस आई। हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया: हम हाशिम की औलाद हैं। हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने दीदार और कलाम को हज़रत मुहम्मद और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलातु वस्सलाम के दरमियान तक़सीम फ़रमाया है।

चुनाँचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दो बार गुफ्तगू फरमाई। हज़रत मसख्क रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया: मैं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हाज़िर हुआ और अर्ज किया: क्या हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार किया है? उन्होंने फरमाया: तुमने ऐसी बात की है जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। मैंने अर्ज किया: ज़रा सुकून से काम लीजिए फिर मैंने यह आयते करीमा तिलावत की:

لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى۔ (النجم: ١٨)

तर्जुमा: उन्होंने अपने परवर्दिगार (की कुदरत) के बड़े-बड़े अजायबात देखे।

उन्होंने फरमाया: यह आयते करीमा तुम्हें कहां लेजा रही है? (यानी तुम इसका ग़लत मतलब समझ रहे हो) इससे हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम मुराद हैं। तुम्हें यह किसने बतलाया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को देखा था या आपने किसी ऐसी बात को छुपाया जिसके बतलाने का आपको हुक्म दिया गया था, या आप उन पाँच बातों को जानते हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह फरमाया है:

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ (لقان: २६)

तर्जुमा: बेशक अल्लाह ही को क़ियामत की ख़बर है और वही बारिश बरसाता है।

तो उसने बड़ा बोहतान बांधा। अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत-शक्ल में सिर्फ़ दो बार ही देखा था, एक बार 'सिदरतुल मुन्तहा' के पास और एक बार अजयाद (मक्का की घाटियों में एक जगह है)

में। उन (हज़रत ज़िबराईल) के छह सौ पर थे जिन्होंने आसमान के किनारों को भर रखा था। (१)

यह तिर्मिज़ी की रिवायत है। बुख़ारी व मुस्लिम ने कुछ ज़्यादा और इब्निताफ़ के साथ इसे रिवायत किया है। उनकी रिवायत में है: मस्रूक ने कहा: मैंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया: अल्लाह तआला के मुबारक फ़रमान:

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى، فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ. (النجم: १०)

तर्जुमा: वह नज़दीक हुआ और ज़्यादा नज़दीक हुआ, सो दो कमानों का फासला रह गया बल्कि और भी कम।

का क्या मतलब है? उन्होंने फ़रपाया: यह तो हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम के बारे में है, वह इन्सानी शक्ल में आया करते थे, इस बार वह अपनी असली शक्ल व सूरत में आए थे उससे आसमान के किनारे भर गये थे।

हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सवाल को बहुत बड़ा समझ कर जोर से अल्लाहु अकबर कहा, मुश्किन है यह इसलिए कि अल्लाह जल्ल शानुहु के दीदार के बारे में सवाल किया गया है जिसके बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया था कि इसकी वजह से मेरे खंगटे खड़े हो गये, या उस मक़ाम की बड़ाई और शौक की वजह से ऐसा किया हो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने यह फ़रमाकर कि हम हाशिम की औलाद में से हैं इस जानिब इशारा किया कि हम इल्म वाले और जानकार हैं, किसी ऐसी बात का सवाल नहीं करते जो मुहाल या नामुनासिब हो, इसलिए आप परेशान न हों।

“ल-क़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुबरा” से मुराद सिर्फ़ यही आयत नहीं बल्कि इससे मुराद है “सुम्-म दना फ-तदल्ला” से ज़िक्र की गयी आयत तक का हिस्सा।

अल्लाह का दीदार

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तबारक व तआला के फ़रमाने मुबारक:

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ. (النجم: १)

तर्जुमा: सो दो कमानों का फासला रह गया बल्कि और भी कम।
और:

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ. (النجم: ११)

तर्जुमा: दिल ने कोई ग़लती नहीं की देखी हुई चीज़ में।
और:

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ. (النجم: १८)

तर्जुमा: उन्होंने अपने परवर्दिगार (की कुदरत) के बड़े-बड़े अजायबात देखे।

के बारे में फ़रमाया: इन तमाम आयतों में हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम के देखने का ज़िक्र है। हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा था उनके छह सौ पर थे। (१)

तिर्मिज़ी की रिवायत में आता है: “मा क-ज़बल् फुआदु मा रआ” यानी दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की, फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़िबराईल को रफ़रफ़

में देखा था उन्होंने आसमान व ज़मीन के दरमियान की तमाम ख़ाली जगह को पुर किया हुआ था। तिमिज़ी और बुख़ारी की एक रिवायत में है “ल-क़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुब्रा” यानी उन्होंने अपने परवर्दिगार के बड़े-बड़े कुदरत के अज़ायबात देखे, फ़रमाया: आपने सब्ज़ रफ़रफ़ वाले को देखा आसमान के तमाम किनारों को पुर किए हुए थे। इमाम मालिक बिन अनस से अल्लाह तआला के फ़रमान “इला रब्बिहा नाज़ि-रतुन्” कि अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे, के बारे में पूछा गया और कहा गया कि बाज़ लोग कहते हैं (यानी मोतज़िला वगैरह) कि अल्लाह तआला की नेमतों के मुन्तज़िर होंगे। इमाम मालिक ने फ़रमाया: उन लोगों ने झूठ कहा, फिर ये लोग अल्लाह तआला के इस मुबारक फ़रमान:

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ. (المطففين: ١٥)

तर्जुमा: हरगिज़ ऐसा नहीं (कि जज़ा व सज़ा न हो) ये लोग उस दिन अपने परवर्दिगार (के दीदार) से रोक दिए जाएंगे।

के बारे में क्या कहेंगे। इमाम मालिक ने फ़रमाया: क़ियामत में अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार लोग अपनी आँखों से करेंगे, और फ़रमाया कि अगर मोमिनों को क़ियामत में अपने परवर्दिगार का दीदार न होगा तो फिर अल्लाह तआला काफ़िरो को इससे महसूस रहने की आर (शर्म) न दिलाते, यह न फ़रमाते:

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ. (المطففين: ١٥)

तर्जुमा: हरगिज़ ऐसा नहीं (कि जज़ा व सज़ा न हो) ये लोग उस दिन अपने परवर्दिगार (के दीदार) से रोक दिए जाएंगे। (१)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार न कर सकेंगे और यह

हिजाब (पर्दा और रुकावट) सबसे बड़ा अज़ाब होगा जिस तरह अल्लाह तआला का दीदार तमाम नेमतों से बढ़कर है। इर्शाद है: “लिल्लीज़ी-न अह्सनुल हुस्ना व ज़ियादतुन्” यानी जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भलाई है और उसके अलावा भी। यानी जो लोग दीदारे खुदावन्दी के काइल नहीं हैं वे उसके बारे में क्या कहेंगे, इसलिए कि मोमिन तो दीदारे खुदावन्दी से मस्त होंगे, उनपर खुदा की यह रहमत होगी, अपने खुदा-ए-जुलजलाल के दीदार से सुख-रू और फायदा उठाने वाले होंगे। रफरफ के बहुत से मायने आते हैं। बाज़ हज़रात ने बिछौने और बिस्तर किए हैं, बाज़ ने कहा रेशम वगैरह का बना हुआ शानदार फर्श या इससे फरिश्तों के पर मुराद हैं, कहते हैं ‘रफरफुत्ताइर’ यानी परिन्दे ने किसी चीज़ पर उतरने के लिए पर फैलाए।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: इस दौरान कि जन्नती नेमतों में डूबे होंगे उनके सामने एक खास किस्म का नूर चकमेगा, वे सर उठाकर देखेंगे कि ऊपर से अल्लाह जल्ल शानुहू मुतवज्जह हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे: जन्नत वालो! तुमपर सलामती हो, यही मुराद है अल्लाह तआला के इस इर्शाद से:

سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَجِيمٍ (يَس: ०८)

तर्जुमा: सलाम उन्हें कहा जाएगा परवर्दिगार मेहरबान की तरफ़ से।

अल्लाह जल्ल शानुहू उनको देखेंगे और वे अल्लाह जल्ल शानुहू को देखेंगे। जब तक दीदारे खुदावन्दी करते रहेंगे किसी और चीज़ की तरफ़ कतई मुतवज्जह न होंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआला पर्दा करेगा, उसके नूर का असर (उनपर) बाकी रहेगा। (१)

यानी अल्लाह के दीदार में ऐसी लज्जत व कशिश होगी कि उसके सामने तमाम नेमतें और लज्जतें भूल जाएंगे, बेखुद होकर इसमें खोए रहेंगे, फिर जब अल्लाह जल्ल शानुहू अपने बन्दों के दरमियान हिजाब (पर्दा) डाल देंगे तो वे दूसरी चीजों की तरफ तवज्जोह करेंगे। वहर हाल तजल्ली-ए-रब्बानी और ज़ियारते खुदावन्दी का असर उनके चेहरे के हुस्न व खूबसूरती से साफ़ ज़ाहिर होगा।

अब तक ज़िक्र की गी हदीसें मिश्कात से ली गई थीं, आगे 'तंबीहुल गाफिलीन' (पेज: ३६ से ४० तक) वाली मौकूफ हदीसें ज़िक्र की जा रही हैं।

जन्नत की हूरें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जन्नत में एक ऐसी हूर होगी जिसे गुड़िया कहा जाएगा जो चार चीजों से बनाई गई होगी, मुश्क, अंबर, काफूर और ज़ाफ़रान, और उसकी मिट्टी आबे हयात से गूंधी गई होगी, और अज़ीज़ व करीम ज़ात ने उसे हुक्म दिया 'तैयार हो जाओ' और वह पैदा हो गई। तमाम हूरें उसकी आशिक होंगी। वह अगर एक बार समुद्र में धूक दे तो समुद्र का पानी मीठा हो जाए। उसके सीने पर लिखा होगा "जिस शख्स को मुझ जैसी हूर चाहिए उसे मेरे परवर्दिगार की इताअत व फ़रमांबरदारी करना चाहिए।"

जन्नत के पेड़

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: जन्नत की सरज़मीन चाँदी की और उसकी मिट्टी मुश्क की और पेड़ों के तने चाँदी के और उनकी टहनियाँ मोती और ज़बरजद की और पत्ते-फल नीचे

लटकते होंगे जो उन्हें खड़े-खड़े खाना चाहेगा उसे कुछ तकलीफ न होगी और जो बैठकर खाना चाहे उसे भी कुछ मशक्कत न होगी, और जो लेटे-लेटे खाना चाहे उसे भी कुछ दिक्कत न होगी, फिर यह आयते करीमा तिलावत फरमाई:

وَذَلَّلْتَ قُطُوفَهَا تَذْلِيلًا. (الدھر: ۱۴)

तर्जुमा: और उनके मेवे उनके बिल्कुल इख्तियार में होंगे।

यानी उनके फल करीब कर दिए जाएंगे ताकि खड़े होने और बैठने वाला सब आसानी से तोड़ सकें। वहाँ किसी काम में ज़हमत बर्दाश्त न करना पड़ेगी। हर चीज़ इशारे और हुक्म के ताबे होगी।

जन्नतियों की खूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: कसम है उस ज़ात की जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किताब नाज़िल की, जिस तरह दुनिया में बुढ़ापे में इज़ाफ़ा होता रहता है इसी तरह जन्नत वालों के हुस्न व खूबसूरती में इज़ाफ़ा होता रहेगा। इसलिए कि दुनिया फ़ानी है और बुढ़ापा फना होने की पहली मन्ज़िल हेता है। जन्नत हमेशा रहने वाली और बाक़ी है इसलिए वहाँ बजाय गिरावट के तरक्की, और ज़वाल के बजाय कमाल हासिल होगा।

जन्नतियों का डील-डोल

हज़रत इक्रमा रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं: जन्नती मर्द व औरतें तैंतीस-तैंतीस साल के होंगे, क़द अपने ज़द्दे अम्ज़द हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बराबर साठ हाथ होगा, जिस्म पर बाल न होंगे, वेदाढ़ी, सुरमगी आँखों वाले नौजवान होंगे, सत्तर पोशाकें पहने होंगे, हर पोशाक हर घन्टे में सत्तर रंग बदलेगी और जन्नती मर्द

(लताफत की वजह से) अपना चेहरा अपनी बीवी के चेहरे, सीने और पिंडली में देखेगा और बीवी अपना चेहरा जन्नती के चेहरे, सीने और पिंडली में देखेगी। वहाँ न (मुँह से) थूक आएगा, न नाक की रेज़िश (पानी और रेट वगैरह) और उसके अलावा और गन्दगियों का सवाल ही पैदा नहीं होता।

जन्नत का पेड़ तूबा

हज़रत मातब बिन सम्मी अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़रमाने मुबारक:

طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ. (الرعد: २९)

तर्जुमा: उनके लिए खुशहाली और अच्छा अन्जाम है।

के बारे में फ़रमाते हैं: तूबा जन्नत का एक पेड़ है जिसकी कोई न कोई टहनी जन्नत के हर घर पर साया किए हुए होगी, उसमें मुख़्तलिफ़ किस्म के फल लगे होंगे, उसपर बुख्ती फ़रासानी ऊँट के बराबर परिन्दे बैठे होंगे। जन्नतियों में से जब कोई शख्स उन परिन्दों में से किसी को खाने का इच्छुक होगा उसे बुलाएगा वह आकर उसके दस्तरख्वान पर गिर जाएगा, उसका एक हिस्सा गोश्त की बोटियों की शकल में बन जाएगा दूसरा हिस्सा भुने हुए गोश्त की शकल में। वह उससे खाएगा (जब खा चुकेगा) तो फिर वह परिन्दा बनकर उड़ जाएगा। यह है इनाम और पैदा करने की खूबी का कमाल, इन्सान की तमन्ना व ख्वाहिश भी पूरी होगी और उसमें परेशानी व मशक्कत भी न होगी और फिर एक परिन्दा तरह-तरह की डिश बनकर जन्नती का दिल खुश करेगा।

पाँच चीजें

फ़कीह अबू लैस समरक़न्दी फ़रमाते हैं: जो इन सम्मानों से सम्मानित होना चाहे उसे पाँच चीज़ों की पाबन्दी करनी चाहिए।

१. अपने आपको तमाम गुनाहों और नाफ़रमानियों से बचाए। अल्लाह पाक का इशार्द है।

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ، فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ. (النّازعات: ४०, ४१)

तर्जुमा: और नफ़स को ख़्वाहिश से रोका होगा तो ऐसे का ठिकाना जन्नत ही है।

२. दुनिया के थोड़े से हिस्से पर क़नाअत करे इसलिए कि हदीस में आता है: जन्नत की कीमत दुनिया छोड़ना है।

३. नेकियों और ताआत का हरीस रहे, हर नेकी अपनाए, हो सकता है वही मग़फ़िरत का ज़रिया और जन्नत का सबब बन जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ. (الزّخرف: ७२)

तर्जुमा: और यही वह जन्नत है जिसके अपने आमाल के बदले में तुम मालिक बना दिए गए हो।

एक आयत में है: “जज़ाअम् बिमा क़ानू तअमलून” यह उनके आमाल का बदला है। ये बुलन्द दर्जे नेकियों में लगे रहने की वजह से हासिल होंगे।

४. सालिहीन और नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखे, उनके साथ मेल-जोल रखे, उठे-बैठे, इसलिए कि उनमें से जिस नेक आदमी की मग़फ़िरत कर दी जाएगी वह अपने साथियों और दीनी भाईयों को सिफ़ारिश करेगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में आता है कि (दीनी) भाई

कसरत से बनाओ, इसलिए कि हर (मुसलमान) भाई कियामत के दिन सिफारिश करेगा।

आखिरत का आराम

५. कसरत से दुआ करे और अल्लाह जल्ल शानुहू से जन्नत और अच्छा खात्मा होने की दुआ करे।

एक हकीम ने लिखा है: आखिरत के अज़ीम सवाब को देखते हुए दुनिया की तरफ़ मैलान जहालत है, और नेक आमाल के अज़्र व सवाब को जानते हुए नेक आमाल की कोशिश न करना अज़िज़ी है, और जन्नत में बहुत राहत व आराम है जो सिर्फ़ उसे ही मिलेगा जो दुनिया में बेआराम रहा हो (इबादत, ज़िक्र और ताआत में लगा रहा हो) वहाँ ऐसी गिना और मालदारी है जिसे वही पाएगा जिसने दुनिया फुज़ूल धन्धे छोड़ दिए हों और दुनिया के मामूली से हिस्से पर इक्तिफ़ा की हो।

दुनिया आखिरत की खेती है

एक ज़ाहिद (अल्लाह वाले) के बारे में लिखा है कि वह नमक और सब्जी वगैर रोटि के खा रहे थे। एक साहिब ने उनसे कहा: आपने इसपर इक्तिफ़ा कर रखा है। उन्होंने जवाब दिया: दुनिया को आखिरत कमाने के लिए पैदा किया है लेकिन तुमने दुनिया को ज़ख़रत पूरी करने (यानी शौच) ही की जगह बना लिया है कि उम्दा से उम्दा चीज़ें खाकर बैतुलख़ला (शौचालय) चले जाते हो, मैं तो कमर सीधी रखने और इबादत की अदायगी के लिए खाता हूँ ताकि जन्नत तक पहुँच जाऊँ।

जन्नत का टिकट

हज़रत इब्राहीम बिन अधम रहमतुल्लाहि अलैहि के बारे में लिखा है कि उन्होंने हम्माम में दाखिल होना चाहा तो हम्माम वाले ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया और कहा: पैसे दीजिए फिर अन्दर जाइएगा। वह रोने लगे और फरमाया: ऐ अल्लाह! मुझे शैतानों के घर में बिना टिकट मुफ्त में दाखिल होने की इजाज़त नहीं दी जा रही है तो भला अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम और सिद्दीकीन के घर में मुफ्त में बिना टिकट दाखिला किस तरह होगा।

जन्नत की कीमत

लिखा है कि अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी अलैहिस्सलाम पर “वही” नाज़िल फ़रमाई: इब्ने आदम! तू दोज़ख़ के ख़रीदने के लिए तो बहुत पैसे ख़र्च करता है लेकिन जन्नत मामूली सी कीमत पर भी नहीं ख़रीदता।

इसका मतलब यह है कि अगर कोई फ़ासिक फ़ाजिर (बुरा और गुनाहगार आदमी) अपने जैसे लोगों की मेहमान नवाज़ी करना चाहता है तो उसपर सैकड़ों रुपये बड़े आराम से ख़र्च कर देता है, और उसे कुछ भी महसूस नहीं होता, तो वह गोया ज़्यादा पैसों में दोज़ख़ ख़रीदता है। और अगर वह अल्लाह तआला के लिए दो-चार रुपये ख़र्च कर ले, ग़रीबों और मिस्कीनों को बुला ले और उनकी दावत कर दे, यह बात उसके लिए जन्नत का बदला बनेगी, यह उसपर बहुत भारी गुज़रती है।

जन्नत व दोज़ख़ का दाख़िला

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है फ़रमाया:

अगर जन्नत में दाखिला इस शर्त पर मिलता कि दुनिया की तमाम पसन्दीदा चीजें छोड़ दी जाएं तब भी जन्नत के मुकाबले पर यह आसान था। और अगर दोज़ख से नजात उस सूरत में मिलती कि इन्सान हर किस्म की तकलीफें झेले तब भी यह उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं है।

फिर भला इस सूरत में मामला कितना आसान और सौदा कितना सस्ता है कि आपको अपनी पसन्दीदा चीजों का हज़ारवाँ हिस्सा छोड़ने पर ही जन्नत मिल रही है और तकलीफों का हज़ारवाँ हिस्सा बर्दाश्त करने पर जहन्नम से नजात मिल रही है।

जन्नत का मेहर

हज़रत यहया बिन मुआज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया: दुनिया का छोड़ना बहुत मुश्किल है और जन्नत का छोड़ना इससे भी ज्यादा मुश्किल है। और जन्नत का मेहर दुनिया को छोड़ना है। जैसे दुनिया में हर चीज़ का एक बदल होता है, शादी में औरत को मेहर दिया जाता है इसी तरह जन्नत की भी एक कीमत है और वह यह है कि दुनिया से किनारा कर लिया जाए। दुनिया में दिल न लगाया जाए। दुनिया में इस तरह रहे जिस तरह कश्ती पानी में रहती है कि पानी कश्ती के बाहर होता है अगर वह उसके अन्दर आ जाए तो कश्ती डूब जाएगी। इसी तरह दुनिया की मुहब्बत दिल में न हो, दिल में खुदा की मुहब्बत रची-बसी हो, हाँ दुनिया अमल करने की जगह है, आखिरत की खेती है इसलिए आखिरत की तैयारी में लगा रहे।

आने वाले पेजों में ज़िक्र हुआ हिस्सा 'बुस्तानुल आरिफीन' (पेज: ४२८, ४२९) से लिया गया है।

जन्नत की किस्में

फकीह अबू लैस फरमाते हैं: जन्नतें चार हैं। (१) जन्नतुल खुल्द (२) जन्नतुल फिरदौस (३) जन्नतुल मावा (४) जन्नाते अद्न। जन्नत के आठ दरवाजे हैं।

नेमत का दस्तरख्वान

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया: जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला वह शख्स होगा जिसे जन्नत में पाँच सौ साल की दूरी की जगह मिलेगी और उसे पाँच सौ हूरें मिलेंगी और जन्नती अपनी बीवी से दुनिया की पूरी उम्र के बराबर मुआनका किए (यानी गले से लगा) रहेगा। उसके सामने नेमत का दस्तरख्वान लगाया जाएगा लेकिन दुनिया की सारी उम्र के बराबर मुद्दत में भी उसका पेट नहीं भरेगा, यही मामला पीने में होगा।

जन्नत की नेमतों की नज़ीरें

लिखा है कि जन्नत की तमाम नेमतों की दुनिया में नज़ीर (मिसाल और उदाहरण) पाई जाती है। चुनाँचे जन्नती खाएं पिएंगे लेकिन पेशाब-पाख़ने की ज़रूरत न पड़ेगी। इसकी नज़ीर दुनिया में इस तरह है जैसे माँ के पेट में बच्चा। जन्नतियों को खादिम मिलेंगे, इन्सान जिस चीज़ की तमन्ना करेगा वह उसका हुक्म मिलने से पहले उसे हाज़िर कर देंगे। उन्हें उनकी पसन्दीदा चीज़ और उनकी ख्वाहिश का उनके मुँह से कहने से पहले इल्म हो जाएगा। दुनिया में इसकी नज़ीर इन्सान के जिस्मानी अंग हैं कि इन्सान को जब किसी चीज़ की ख्वाहिश होती है तो उसके जिस्मानी अंग उसे पहचान लेते हैं और वह उसके हुक्म देने और मुँह से कहने से पहले उसकी ख्वाहिश पूरी कर

देते हैं।

जन्नत में एक पेड़ है जिसका नाम 'तूबा' है, उसकी जड़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौलतकदे (रिहाइश के मकाम) में होगी और उसकी शाखें हर घर और जन्नत के हर कोने में होंगी। उसकी नज़ीर सूरज है कि उसकी रोशनी हर घर और हर जगह पहुँचती है : यह पहाड़, घोंसले और सूराख में दाखिल होती और तमाम दुनिया में फैल जाती है। जन्नत का खाना न कभी खत्म होगा न उसमें कमी आएगी चाहे जन्नती कितना ही खा लें। दुनिया में उसकी नज़ीर कुरआन करीम है। लोग उसे सीखते, पढ़ते-पढ़ाते हैं लेकिन वह अपनी हालत में मौजूद है उसमें कोई कमी नहीं आती।

जन्नत में फैला हुआ साया होगा। दुनिया में उसकी नज़ीर वक़्त है जो सूरज निकलने से पहले और बाद का है यहाँ तक कि रात की स्याही आ जाए। चुनाँचे इसी तरह जन्नत में लम्बा फैला हुआ साया होगा। यही अल्लाह तआला के इस फ़रमान में मज़कूर है:

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ- (الفرقان: ४०)

तर्जुमा: क्या तूने अपने परवर्दिगार पर नज़र नहीं की कि उसने साया को क्योंकर फैला दिया है।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत है कि फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें एक ऐसी घड़ी के बारे में न बतलाऊँ जो जन्नती लोगों के वक़्त के जैसी है और वह वह है जो सूरज निकलने से पहले है। जन्नत का साया हमेशा रहेगा, उसमें हर जगह रहमत फैली होगी, बरकत का दौर दौरा होगा। जन्नत के दारोगा का नाम रिज़वान है उन्हें रहमत व मेहरबानी अता कर दी गई है।

खात्मा

आयाते करीमा और अहादीसे नबविया आपने पढ़ लीं, उनके पढ़ने का हासिल यह होना चाहिए कि हर तरह जन्नत हासिल करने की कोशिश की जाए। दुनियावी मुसीबतों और तकलीफों को वर्दाश्त किया जाए, राहत व आराम को कुर्बान किया जाए, उन चीजों से बचा जाए जो जन्नत से दूर और जहन्नम के करीब करने वाली हैं और उन कामों को किया जाए जो जन्नत के करीब और जहन्नम से दूर करने वाले हैं।

१. मुसलमान होने, अल्लाह जल्ल शानुहू के एक होने और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने का इकरार करने के बाद हर मुसलमान पर दिन और रात में पाँच नमाज़ें फर्ज होती हैं। नमाज़ों को उनके मुकर्ररा वक्तों पर जमाअत से पढ़ने की कोशिश की जाए इसलिए कि:

रोज़े महशर कि जाँ गुदाज़ बुवद

अव्वलीं पुर्सिश नमाज़ बुवद

मर्दों को पाँचों वक्त की नमाज़ जमाअत से पढ़ना चाहिए इसलिए कि जो नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाती है उसका उस नमाज़ के मुकाबले में पच्चीस या सत्ताईस गुना ज़्यादा अज़्र मिलता है जो तन्हा पढ़ी जाए, औरतों को मक्खह वक्त शुरू होने से पहले पढ़ना चाहिए, इसमें किसी किस्म की कोताही तबाही का सबब बन सकती है।

२. जो हज़रात हैसियत वाले हैं उन्हें हर साल अपने माल की ज़कात देना चाहिए। ज़कात देने से माल पाक होता है, इन्सान जहन्नम की आग से बचता है, बाकी बचा हुआ माल चोरी, ज़ाया होने और तबाह होने से महफूज़ रहता है। कन्जूसी की बीमारी का भी इलाज

होता है और साथ ही उससे माल में इजाफ़ा और बरकत भी होती है।

३. साल में रमज़ान मुबारक के रोज़े हर आफ़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं। काहिली, सुस्ती और लापरवाही की वजह से इस अहम फ़रीजे से आफ़िल नहीं रहना चाहिए। इसपर अज़्र व सवाब जो मिलता है वह तो मिलता ही है उसके साथ-साथ इससे यह भी फ़ायदा हासिल होता है कि ग़रीबों की भूख-प्यास का एहसास पैदा हो जाता है, उनके साथ ग़मख़्वारी आसान हो जाती है, फिर उससे साल भर की बीमारियों का भी इलाज हो जाता है बशर्ते कि रोज़ा रोज़े की तरह रखा जाए। इफ़तार व सेहरी में पेट को ज़रूरत से ज़्यादा न भरा जाए और साथ ही रोज़े में झूठ बोलना, ग़ीबत करना, फुजूल बातें और इधर-उधर की बद-निगाही करते फिरने से बचा जाए।

४. जिन हज़रात के पास दौलत है वे हज और उमरः भी करें। हज से गुनाह माफ़ होते हैं, इस्लाम की बुनियादों में से एक बुनियाद है, अल्लाह जल्ल शानुहू के इश्क़ में मस्त होकर हाजी लिबास-पोशाक, गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास सबसे बेनियाज़ होकर तलबिया पढ़ता हुआ निकलता है। कभी मक्का मुकर्रमा में बैतुल्लाह का तवाफ़ हो रहा है, कभी सफ़ा व मर्वा के दरमियान सई, कभी आबे ज़म्ज़म ईमान व यकीन को बढ़ा रहा है, कभी काबा के ग़िलाफ़ को पकड़कर अपनी ग़लतियों, कोताहियों और गुनाहों की माफ़ी के असबाब मुहैया किए जा रहे हैं, कभी मिना में हैं तो कभी अरफ़ात के मैदान में, कभी रमी हो रही है कभी ज़िब्हा, कभी सर को मुंडवाया या बाल कतरवाए जा रहे हैं।

५. कुरआने करीम की तिलावत रोज़ाना करनी चाहिए। दिन की शुरूआत अल्लाह जल्ल शानुहू के मुबारक कलाम से हो। रोज़ाना एक

पारा पढ़ सकें तो सुब्हानल्लाह वरना जितना हो सके रोज़ाना ज़रूर पढ़ें। कुरआन पढ़ना अज़्र व सवाब का सबब और जन्नत में दाखिले का मूजिब है। कुरआने करीम पढ़ने वाला अल्लाह तआला से मुखातिब होता है।

जिसने कुरआन पढ़ा गोया किया हक़ से कलाम

वाह क्या कुर्ब का सामान है कुरआन शरीफ़

कुरआने करीम में ज़िक्र हुए अहकामात पर अमल किया जाए और उन चीज़ों से बचा जाए जिनसे बचने का हुक्म दिया गया। पिछली क़ौमों के वाकिआत से इब्रत का सबक़ हासिल किया जाए। बच्चों को पढ़ाया जाए उसका हाफ़िज़ बनाया जाए, हो सके तो उसके मायने व मताल्लिब समझने की कोशिश करें।

६. ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ अहकाम व मसाइल सीखें ताकि जिस वक़्त अल्लाह तआला का जो हुक्म हो उसपर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ हो सके। इतना इल्मे दीन हासिल करना हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है जिससे रोज़े नमाज़ वगैरह को रुही तौर से अदा कर सके। बच्चों को भी बचपन ही से उनकी उम्र के मुताबिक़ अहकाम व मसाइल सिखाना चाहिए।

७. ग़रीबों, मिस्कीनों, मोहताजों, बेवाआ, ज़रूरत-मन्दों और हाजत-मन्दों के साथ नरमी से पेश आइए, उनके साथ जो ग़मख़्वारी और इमदाद व सहयोग हो सके कीजिए। अल्लाह तआला के नाम पर जितना हो सके रोज़ाना सद्का-ख़ैरात करके आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाइए।

८. बीबी-बच्चों, रिश्तेदारों और दोस्तों व पड़ोसियों से मुताल्लिक़

अहकाम जानिए। उनके हुक्म समझिए, उन्हें अदा कीजिए ताकि क़ियामत के दिन उनकी वजह से आपकी गिरफ्त न हो। याद रखिए आपसे आपके बीबी-बच्चों, मातहतों, रिश्तेदारों और मौहल्ले वालों के बारे में भी पूछ-ताछ होगी।

६. अच्छी बातों का हुक्म देते रहिए। अगर किसी को ग़लत काम करता देखें तो निहायत हिक्मत, तदबीर और सलीके से उसे उसका नुक़सान बताकर उससे बाज़ रहने की तरगीब दीजिए। उसका अपमान या तौहीन का पहलू किसी सूरत में इख़्तियार न कीजिए वरना बजाय फ़ायदे के नुक़सान होगा। यह याद रखिए कि आप जो भी अच्छे काम, नेकियाँ, इबादतें वग़ैरह लोगों में जारी कराएंगे जितना अज़्र उनके करने वालों को मिलेगा उतना ही सवाब आपको उसका ज़रिया बनने की वजह से मिलता रहेगा। जो शख्स किसी ख़ैर की तरफ़ रहनुमाई करता है उसे उतना ही अज़्र मिलता है जितना उसके करने वाले को मिलता है लेकिन उससे उसके करने वाले के अज़्र में कमी नहीं आती। ये नेकियाँ आपके लिए जारी रहने वाला सद्का बनेंगी और क़ियामत तक अज़्र व सवाब का ज़रिया और जन्नत में दर्जों के बुलन्द होने का ज़रिया होंगी।

१०. अपने बच्चों को शुरू से कुरआने करीम की तालीम दें और कोशिश करें कि वे आपके लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनें जिसका तरीका यह है कि उन्हें दीन के इल्म की तालीम दीजिए, उनकी दुनिया व दीन भी सँवरेगा और आपके लिए भी अज़्र व सवाब का सबब होगा। दूसरी सूरत में उनकी अख़्लाकी बर्बादी, अमली कोताहियों वग़ैरह के आप ज़िम्मेदार होंगे, आपका गिरेवान होगा उनका हाथ होगा, इस फ़रीजे को समझना चाहिए। बुजुर्गों की सोहबत में ले जाइए, अल्लाह

वालों से मिलाइए, उनके लिए अच्छे साथियों का चुनाव कीजिए, नमाज़ रोज़े का पाबन्द बनाइए, शुरू से उनकी दीनी तरबियत का ख़ूब एहतिमाम कीजिए। इस सिलसिले में अगर तरबियत का तफ़्सीली तरीका जानना चाहें तो “इस्लाम और तरबियते औलाद” का मुताला कर लीजिए।

११. दुनिया बनाने के साथ-साथ आख़िरत की फ़िक्र भी करें। आख़िरत की फ़िक्र को ग़ालिब कीजिए, दुनिया जैसी भी गुज़रे कोई परेशानी की बात नहीं, यह मुसाफ़िर ख़ाना है इसमें दिल न लगाइए। कोई भी अक्लमन्द किसी स्टेशन पर अपना मकान तामीर नहीं करता, वहाँ विस्तर बोरिया डालकर नहीं बैठता, वक़्त गुज़ारने के लिए वहाँ रुकता है फिर आगे चल देता है। दुनिया भी एक मुसाफ़िर ख़ाना, सराय और स्टेशन है, हमारी और आप सबकी मन्ज़िले पक़सूद आख़िरत है, उसकी बेहतरी और वहाँ की कामयाबी की कोशिश कीजिए, उसके लिए पूरी तरह कोशिश करते रहिए और ख़ैर का कोई ऐसा मौका हाथ से न जाने दीजिए जो उसे बेहतर से बेहतर बनाता हो।

१२. कुछ वक़्त नवाफ़िल और ज़िक्र व तस्बीहात में भी लगा लिया कीजिए ताकि जन्नत में दरख़्तों का इज़ाफ़ा हो। आपके दरजे बढ़ें और दिल में अल्लाह तआला का नूर पैदा हो। दिल की स्याही दूर हो, दिल को इत्मीनान नसीब हो, इसलिए कि दिलों का सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला के ज़िक्र में है। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ۔ (الرعد: २८)

तर्जुमा: ख़ूब सुन लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान नसीब होता है।

१३. चौबीस घंटों में चन्द मिनट निकाल कर अपने आमाल का जायज़ा ले लिया कीजिए कि आज कितना वक्त दुनिया के लिए खर्च किया और कितना आखिरत के लिए? कितनी नेकियाँ कीं और कितने गुनाह? कौनसे काम नहीं करना चाहिए थे वे कर लिए और कौनसे करना थे वे छोड़ दिए? इससे नेकियाँ बढ़ेंगी, अच्छाइयों की तौफ़ीक़ मिलेगी और बुराइयाँ कम होंगी।

१४. अगर जन्नत में दाख़िला मक़सूद हो तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चलिए, उसके मुताबिक़ अपने चौबीस घन्टे गुज़ारिए, बिद्अतों और रस्मों-रिवाजों और शरीअत के खिलाफ़ कामों से बचिए।

अल्लाह तआला हमारा आपका सबका खात्मा कामिल ईमान पर करे और हमें जन्नतुल फिरदौस अता फ़रमाए, आमीन।

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَيْرِ
خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ۔

लेखक

मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख्तार